सितम्बर

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीत्यग्निर्वा
अहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदा वा अहमस्मीति॥४॥

(केनोपनिषद् : ३/४)

फिर अग्निदेव उस यक्ष के पास दौड़ कर गये। ब्रह्म ने पूछा ''तुम कौन हो?'' अग्नि ने कहा ''मैं ही अग्नि हूँ, मैं ही जातवेद हूँ।''

ब्रह्मचर्य-साधना :

ब्रह्मचर्य की महिमा

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

स्वरों से रहित कोई भाषा नहीं हो सकती है। आप स्थूल पट तथा भित्ति के बिना चित्र नहीं बना सकते हैं। आप कागज के बिना कुछ लिख नहीं सकते हैं। ठीक इसी प्रकार आप ब्रह्मचर्य के बिना स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक जीवन नहीं प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्मचर्य भौतिक प्रगति तथा मानसिक उन्नति लाता है। ब्रह्मचर्य नैतिकता का आधार है। यह शाश्वत जीवन का आधार है। ब्रह्मचर्य वसन्त-ऋतु का पुष्प है, जिसकी पंखुड़ियों से अमरत्व टपकता है। यह आत्मा में शान्तिमय जीवन का आधार है। यह ऋषियों, जिज्ञासुओं तथा योग के साधकों की बहु-अभीप्सित ब्रह्मनिष्ठा का सुदृढ़ आश्रय है। यह आन्तरिक असुरोंह्लह्लकाम, क्रोध, लोभह्लह्लके विरुद्ध संग्राम करने के लिए रक्षा-कवच है। यह पारलौकिक आनन्द के प्रवेश-द्वार का कार्य करता है। यह मोक्ष-द्वार को उद्घाटित करता है। यह नित्य-सुख, अविच्छिन्न तथा अक्षय आनन्द-प्रदायक है। ऋषि, देवता, गन्धर्व तथा किन्नर भी सच्चे ब्रह्मचारी के चरणों की सेवा करते हैं। ईश्वर भी सच्चे ब्रह्मचारी की चरण-रज अपने मस्तक पर धारण करते हैं। सुषुम्ना-नाड़ी का द्वार खोलने तथा कुण्डलिनी को जाग्रत करने के लिए ब्रह्मचर्य ही एकमात्र कुंजी है। यह श्री, यश, सुकृत तथा मान-प्रतिष्ठा लाता है। आठों सिद्धियाँ तथा नवों निधियाँ सच्चे ब्रह्मचारी के चरणों में लोटती हैं। वे उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए सदा तत्पर रहती हैं। यमराज भी ब्रह्मचारी से दूर भागता है। सच्चे ब्रह्मचारी की महामनस्कता, वैभव तथा महिमा का वर्णन कौन कर सकता है!

''**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।**'' वेदों की घोषणा है कि ब्रह्मचर्य तथा तप से देवताओं ने काल को भी जीत लिया है। हनुमान् महावीर कैसे बने? उन्होंने अपने इस ब्रह्मचर्य-रूपी शस्त्र के द्वारा ही अद्वितीय बल तथा शौर्य प्राप्त किया। पाण्डवों तथा कौरवों के पितामह महान् भीष्म ने ब्रह्मचर्य से ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। आदर्श ब्रह्मचारी लक्ष्मण ने ही रावण के पुत्र अपरिमेय शक्तिशाली तथा त्रिलोक-विजेता मेघनाथ को धराशायी किया था। भगवान् राम भी उसका सामना नहीं कर सकते थे। लक्ष्मण ही ब्रह्मचर्य के बल से अजेय मेघनाथ को परास्त कर सके थे। सम्राट् पृथ्वीराज के शौर्य तथा महत्ता का कारण ब्रह्मचर्य का बल ही था। त्रिलोक में ऐसा कुछ भी नहीं है जो ब्रह्मचारी के लिए अप्राप्य हो। प्राचीन काल के ऋषि ब्रह्मचर्य के महत्त्व से भली-भाँति परिचित थे। यही कारण है कि उन्होंने सुन्दर काव्यों में ब्रह्मचर्य की महिमा का गान किया है।

जिस प्रकार तेल वर्तिका में ऊपर आ कर देदीप्यमान् प्रकाश के साथ जलता है, उसी तरह वीर्य भी योग-साधना के द्वारा ऊर्ध्व दिशा की ओर प्रवाहित होता है तथा तेज अथवा ओज में रूपान्तरित होता है। ब्रह्मचारी का मुख-मण्डल ब्राह्म-आभा से चमकता है। ब्रह्मचर्य-रूपी शुभ्र प्रकाश मानव-शरीर-रूपी गृह में चमकता है। यह जीवन के पूर्ण विकसित पुष्प के समान है जिसके चतुर्दिक् शक्ति, धैर्य, ज्ञान, पवित्रता तथा धृति-रूपी भ्रमर इधर-उधर गुंजार करते हुए मँडराते हैं। दूसरे शब्दों में इसे इस तरह कह सकते हैं कि ब्रह्मचर्य-पालन करने वाला

व्यक्ति उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न हो जाता है। शास्त्रों में बलपूर्वक कहा गया है :

आयुस्तेजो बलं वीर्यं प्रज्ञा श्रीश्च यशस्तथा।
पुण्यंच सत्प्रियत्वंच वर्धते ब्रह्मचर्यया।।

''ब्रह्मचर्य के अभ्यास से आयु, तेज, बल, पराक्रम, बुद्धि, धन, यश, पुण्य तथा सत्यप्रियता की वृद्धि होती है।''

स्वास्थ्य तथा दीर्घायु का रहस्य

शुद्ध वायु, शुद्ध जल, पौष्टिक भोजन, शारीरिक व्यायाम, मैदान के खेल, तीव्र गति से टहलना, नौका खेना, तैरना, टेनिस आदि जैसे हलके खेलह्वये सभी सुस्वास्थ्य, शक्ति तथा उच्च कोटि की ओजस्विता बनाये रखने में सहायक हैं। स्वास्थ्य तथा बल प्राप्त करने के लिए निश्चय ही अनेक साधन हैं। निस्सन्देह ये साधन अपरिहार्य रूप से आवश्यक हैं; किन्तु ब्रह्मचर्य इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। ब्रह्मचर्य के अभाव में आपके सभी व्यायाम नगण्य हैं। स्वास्थ्य तथा सुख के राज्य का द्वार खोलने के लिए ब्रह्मचर्य सर्वकुंजी है। यह आनन्द तथा विशुद्ध सुख-शान्ति-रूपी प्रासाद की आधारशिला है। यह सच्चे पौरुष को बनाये रखने की एकमात्र औषध है।

वीर्य की रक्षा ही स्वास्थ्य, दीर्घायु और शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक धरातल की सभी सफलताओं का रहस्य है। जिस व्यक्ति में थोड़ा-सा भी ब्रह्मचर्य है, वह किसी भी रोग के संकट को बड़ी सुगमता से पार कर जाता है। यदि किसी सामान्य व्यक्ति को स्वास्थ्य-लाभ करने में एक माह लगता है, तो यह व्यक्ति एक सप्ताह में ही पूर्ण स्वस्थ हो जाता है।

श्रुतियाँ मनुष्य की पूर्ण आयु सौ वर्ष घोषित करती हैं। इसे आप ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित हो कर प्राप्त कर सकते हैं। लोगों के ऐसे भी उदाहरण हैं जिन्होंने अपने लम्पट तथा अनैतिक आचरण के होते हुए भी दीर्घायु तथा बौद्धिक शक्ति प्राप्त की है; किन्तु यदि उनमें सच्चारित्र्य तथा ब्रह्मचर्य भी होता, तो वे और भी अधिक शक्तिशाली तथा प्रतिभाशाली हुए होते।

जब धन्वन्तरि अपने शिष्यों को आयुर्वेद की सविस्तार शिक्षा दे चुके थे, तो उनके शिष्यों ने इस चिकित्सा-शास्त्र के मूल-सिद्धान्त के विषय की जिज्ञासा की। गुरु ने उत्तर दियाह्वह्व''मैं आपको कहता हूँ कि ब्रह्मचर्य वास्तव में एक बहुमूल्य रत्न है। यह एक सर्वाधिक प्रभावशाली औषध है, वास्तव में अमृत है जो रोग, जरा तथा मृत्यु को विनष्ट करता है। शान्ति, तेज, स्मृति, ज्ञान, स्वास्थ्य तथा आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, जो परम धर्म है। ब्रह्मचर्य सर्वोत्तम ज्ञान है। ब्रह्मचर्य सर्वश्रेष्ठ बल है। यह आत्मा वास्तव में ब्रह्मचर्य-स्वरूप है और यह ब्रह्मचर्य में ही निवास करता है। मैं प्रथम ब्रह्मचर्य को नमस्कार करके ही असाध्य रोगों का उपचार करता हूँ। हाँ, ब्रह्मचर्य सभी अशुभ लक्षणों को मिटा सकता है।''

ब्रह्मचर्य के पालन से सुस्वास्थ्य, मनोबल, मानसिक शान्ति तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। यह मन तथा स्नायुओं को अनुप्राणित करता, शारीरिक तथा मानसिक शक्ति के संरक्षण में सहायता करता और स्मरण-शक्ति, संकल्प-बल तथा मेधा-शक्ति में वृद्धि करता है। यह प्रचुर मात्रा में बल, ओज तथा जीवन-शक्ति प्रदान करता है। इससे बल तथा धैर्य की प्राप्ति होती है।

नेत्र मन के वातायन हैं। यदि मन शुद्ध तथा शान्त है, तो नेत्र भी शान्त तथा स्थिर होंगे। जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित है, उसके नेत्र कान्तिमान्, वाणी मधुर तथा रूप सुन्दर होगा।

(अनूदित)

श्री स्वामी शिवानन्द जी तथा उनका सन्देश

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

श्री स्वामी शिवानन्द जी प्रेमपूरित हृदय वाले ऐसे महान् आत्मा थे जो जीवन-पर्यन्त लोगों को सुखी बनाते रहे। उनके जीवन का यही उद्देश्य था और इसी कारण वे अखिल विश्व में असंख्य व्यक्तियों के प्रेम-भाजन बने। वे बड़े प्रसन्न-हृदय व्यक्ति थे। हँसने और हँसाने में उन्हें आनन्द आता था। बड़े विनोदप्रिय प्रफुल्ल व्यक्ति थे। लोगों के दुःख-शोक को भुलवा कर उनमें आनन्द का आलोक भर देते थे। ऐसा वे हर व्यक्ति के लिए करते थे। वे पूर्व और पश्चिम में, इस जाति और उस जाति में अथवा इस धर्म और उस धर्म में अन्तर नहीं देखते थे।

उनमें महान् करुणा, प्रतिभा और सहानुभूति थी। उनका व्यक्तित्व कुछ इस प्रकार का था कि वह लोगों को तुरन्त अनुभव करा देता था कि वे स्वामी जी के हैं और स्वामी जी उनके हैं। विश्व में पराया उनके लिए कोई नहीं था। सब उनके अपने थे। अतः उन्होंने सब पर अपने प्रेम की वर्षा की। यह बड़ा विलक्षण था कि जो लोग उनकी भाषा नहीं समझते थे और जिनकी भाषा वे नहीं समझते थे, वे लोग भी स्वामी जी के समक्ष आते ही उनसे अपने को एक अनुभव करने लगते थे। वे बड़े सरल स्वभाव के थे। अनेक मन्त्रियों, विद्वानों, राजनीतिज्ञों और सार्वजनिक नेताओं ने आ कर उन्हें श्रद्धा और आदर की भावना अर्पित की, लेकिन स्वामी जी ने कभी भी स्वयं को बड़ा, महान् या असाधारण नहीं समझा।

व्यवहार में वे बड़े सहज, सरल एवं लगभग बच्चों की तरह थे। लेकिन इस निरीह सरलता और स्वाभाविकता के संग ही उनके हृदय में अति-गहरा ज्ञान भी था। उन्होंने यह स्वभाव वर्षों की एकान्त कठोर तपश्चर्या और प्रार्थना से पाया था। साथ ही यह भी सही है कि इसके बीज उनमें बाल्य-काल से ही थे। विद्यार्थी-काल में वे बड़े दयालु और परोपकारी थे तथा बड़े-बूढ़ों के, यहाँ तक कि अपरिचितों के भी काम आते थे। तत्पश्चात् डाक्टरी में योग्यता प्राप्त कर वे डाक्टर बने, भारत से बाहर की यात्रा की और सुदूर पूर्व में जा कर डाक्टरी करने लगे। लगभग दस वर्ष डाक्टरी सेवा करते हुए वे सिंगापुर और मलेशिया में रहे। डाक्टरी सेवा के इस काल ने उनके स्वभाव में बहुत परिवर्तन कर दिया। उन्होंने निर्धन रोगग्रस्त लोगों की बिना किसी लाभ की आशा के चिकित्सा-सेवा की।

उन दिनों मलेशिया रबड़ की उपज करने वाले अँगरेजों के हाथ में था। उस विशाल रबड़ की खेती में पूर्व के लोगों को नौकर रख कर काम करवाया जाता था। वहाँ टिन की भी खानें थीं जिनमें लोग काम करते थे। उनमें भारतीय मजदूर, चीनी मजदूर तथा मलेशिया के मजदूर काम करते थे। रबड़ की एक ऐसी ही बड़ी खेती के निकट वे रहते और काम करते थे। अतः वे करुणा, दया और सहानुभूति से प्लावित हो गये। उन गरीब श्रमिकों के कष्ट और यातनाओं से वे विचलित

हो पड़े। उनका विशाल हृदय उन श्रमिकों के प्रति सहानुभूति और मैत्री-भावना से भर गया और वे सभी के सुहृद् बन गये। कार्य करते हुए उनके लिए दिन और रात में कोई अन्तर नहीं था। उनका द्वार सबके लिए सदा खुला रहता। किसी बीमार आदमी ने जब कभी उन्हें बुलाया, उन्होंने तुरन्त उसे सहायता दी। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि किसी के बहुत अधिक निर्धन होने के कारण वे स्वयं उसके यहाँ जा कर उसकी शुश्रूषा कर देते। बहुधा अपनी जेब से रुपये भी उन्हें दे देते।

उन दिनों के दौरान उनके व्यक्तित्व का इस प्रकार का विकास हुआ। साथ ही रोगियों के सम्पर्क में आ कर उन्होंने मानवीय दुःख, कष्ट, पीड़ा और मृत्यु जैसी चीजों को जाना और इससे उनमें अन्तर्ज्ञान उदित हुआ। उन्हें इस पृथ्वी के जीवन के वास्तविक स्वरूप का बोध हुआ। उनके लिए यह कोई सुन्दर या मधुर अनुभव नहीं था। उन्होंने देखा कि यह कष्ट और पीड़ा से, रोग और मृत्यु से पूर्ण है। अतः उनमें धार्मिक चेतना का उदय हुआ। उन्हें लगा कि यहाँ जीवन कष्ट-पीड़ित है, मानव-शरीर दुःख और व्याधियों का घर है तथा आत्मा इस मानव-शरीर में आबद्ध पड़ी है। परिणामतः उनका चित्त अध्यात्म-दर्शन की ओर मुड़ गया। उन्होंने सन्तों और तत्त्वदर्शी महात्माओं के जीवन-चरित्रों और उपदेशों का अध्ययन किया तथा दुःख एवं कष्ट से छुटकारा पाने का मार्ग ढूँढ़ने में लग गये।

''क्या कोई रास्ता नहीं कि मनुष्य अपनी इस वर्तमान दशा का अतिक्रमण कर सके? क्या मनुष्य को अनुभव की केवल यही अवस्था उपलब्ध है या मनुष्य की पहुँच के अन्दर कोई अन्य अनुभव की अवस्था भी है? ऐसी अवस्था जिसमें इस अवस्था की अपूर्णताएँ, यहाँ के दुःख, कष्ट आदि न हों; प्रत्युत जो शान्ति, आनन्द और वास्तविक सुख अभी यहाँ प्राप्त नहीं हैंह्वह्वउनसे पूर्ण हो।''

यह इस तरह की जिज्ञासा और खोज उन्हें दर्शन और चिन्तन की ओर ले गयी और उन्होंने इन प्रश्नों पर बहुत चिन्तन-मनन किया। अन्ततः उनमें ज्ञान का उदय हुआ कि ऐसी अवस्था अवश्य है जो कल्याण से, प्रभु-कृपा से तथा शान्ति और आनन्द से परिपूर्ण है और यह अवस्था मनुष्य की पहुँच के भीतर ही है। अतः पूर्व-काल में लोगों ने जो उपलब्ध किया था, वह आज भी किया जा सकता है। और उन्होंने इस परम उपलब्धि के लिए स्वयं को समर्पित करने का संकल्प ठान लिया।

एक दिन अचानक उन्होंने अपनी इतनी चलती हुई प्रैक्टिस को, इतनी ख्याति को, सम्पत्ति को, अपनी प्रत्येक वस्तु को तिलांजलि दी और भारत आ गये। वे एकाकी परिव्राजक की तरह आये और मुड़ कर उत्तर दिशा में हिमालय की ओर चल पड़े। हफ्तों और महीनों की यात्रा के उपरान्त गंगा-तट के एक छोटे से गाँव में पहुँचे जो गंगा के निकट ही चारों ओर पर्वतों से घिरा छोटा-सा स्थान था। एक प्रकार से इस स्थल पर आधुनिक सभ्य भारत की अन्तिम सीमा थी। उसके आगे केवल हिमालय के पर्वत और वन-प्रान्त था। इसी स्थल को उन्होंने अपनी एकान्त मौन साधना, तपस्या, उपासना तथा आभ्यन्तर ध्यान-साधना का स्थल बनाया। यहाँ वे सन् १९२३-२४ के बीच में गये थे।

यहाँ वे दस वर्ष ध्यान-मग्न रहे। बहुत कम बोलते थे, आत्म-संयम करते थे, सादा जीवन व्यतीत करते थे और निकटवर्ती लोगों की बड़े स्नेह और सहानुभूति से सेवा करते थे। वह ऐसा स्थान था जहाँ केवल साधु-संन्यासी ही रहते थे। स्वामी जी उनकी भी सेवा करते थे। आस-पास कुछ गाँव भी थे। सीधे, सरल वहाँ के निवासी थे। स्वामी जी उन लोगों को प्रायः डाक्टरी सहायता देते थे। इसके अतिरिक्त उनका शेष समय पूजा, ध्यान और स्वाध्याय में जाता था। कठिन साधना में व्यतीत हुआ जीवन इस अद्भुत व्यक्ति में आध्यात्मिक प्रकाश ले आया। उस दिन से इस महान् उपलब्धि के लिए मानव-जाति को उद्बोधित करना उन्होंने अपने जीवन का ध्येय बना लिया।

अपने इस आनन्द और शान्ति में वे हर एक को भागीदार बनाना चाहते थे। उन्होंने पुकार कर कहाह्नह्न''मित्रो, मेरे प्यारे बच्चो, एक तरीका है जिससे तुम इस जीवन के दुःखों, कष्टों से पार जा कर इसी जीवन में वास्तविक शान्ति और सुख प्राप्त कर सकते हो। तुम यहाँ केवल इसे ही प्राप्त करने आये हो। तुम्हारे जीवन का मुख्य लक्ष्य केवल यही है और यही असली जीवन हैह्नह्नजीवन जो तुम्हें महा-उपलब्धि तक ले जाता है, जहाँ पहुँच कर दुःख का अन्त हो जाता है और हृदय आनन्द से भर उठता है, जहाँ पहुँच कर मन की सारी चंचलता का अन्त हो जाता है और उसमें शान्ति आ जाती है, जहाँ जा कर फिर अन्धकार शेष नहीं रहता, अन्तर में ज्योति छिटक जाती है, जीवन दुःखप्रद नहीं रहता, प्रत्युत महातिशय सुख का हेतु बन जाता है।''

अगणित लोगों के जीवन में उन्होंने जो सन्देश पहुँचाया है, उसे उन्होंने 'दिव्य जीवन' का नाम दिया था। उन्होंने सरल, सार्वभौमिक नाम दिया। इस पर किसी धर्म-विशेष का लेबिल (नामपत्र) नहीं चिपका था। जो जीवन आपको दिव्य अनुभव की ओर ले गया, जो जीवन इस ज्ञान में जिया गया कि जो तत्त्व इस भौतिक शरीर और अशान्त मन के भीतर है, वह पूर्णरूपेण दिव्य तत्त्व है, शाश्वत दिव्य तत्त्व है, महा-शान्ति और दिव्यानन्द वाला तत्त्व है। आपके भीतर यह दिव्यता छिपी हुई है। यह अमर आत्मा आपके अन्तर में है। यह शाश्वत सत्ता है। यह देदीप्यमान् विशुद्ध चेतना है। यही आनन्द है। यह शान्ति है। आपके अन्तर में ही आनन्द का यह आधार है। इसे छोड़ कर, इसकी उपेक्षा करके हम इस विषय-जगत् में इधर-उधर भटक रहे हैं। ऐसी वस्तुओं में सुख पाने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं जो अनित्य हैं, परिवर्तनशील हैं, जो त्रुटियों से भरी हैं और व्यर्थ हैं। अनित्य, परिवर्तनशील और ससीम वस्तुएँ किस प्रकार सच्चा आनन्द और सन्तोष दे सकती हैं? यह असम्भव है।

मनुष्य सुख वहाँ ढूँढ़ता है जहाँ वह नहीं मिल सकता। तब वह रोता-चिल्लाता अवश्य है; परन्तु जानता नहीं कि उसके दुःख का कारण क्या है? दुःख का कारण उसी के अन्तर में है। व्यक्ति की यह बड़ी भारी भूल है कि वह समझता है कि यह अपूर्ण संसार उसे वास्तविक सुख देगा और ऐसा समझना ही संसार के सब दुःखों की जड़ है। इस बहिर्जगत् की कोई भूल नहीं है। जगत् आपके समक्ष खड़ा हो कर कहता नहीं कि आओ, मैं तुम्हें सुख प्रदान करूँगा। संसार के

विविध पदार्थ भी यह घोषणा नहीं करते कि हम ही सुख के स्रोत हैं और हम ही तुम्हें सुख दे सकते हैं। वे किसी चीज का वचन नहीं देते; अतः वे किसी तरह की निराशा उत्पन्न नहीं करते। आप ही हैं जो उनसे आशा करते हैं और तब निराशा को जन्म देते हैं। अतः त्रुटि जगत् में नहीं, मनुष्य में है। और इस प्रकार मनुष्य जन्म से मृत्यु तक भू-जीवन के अरण्य में, नश्वर और परिवर्तनशील विषयों के मरुस्थल में इस कल्पना के साथ भटकता फिरता है कि इन विषयों में वह यहाँ असली सुख पा लेगा।

ये विषय केवल अस्थायी ऐन्द्रिक सुख दे सकते हैं। एक स्वच्छ, सुन्दर आकृति या वर्ण नेत्रों को किंचित् सुख दे सकता है। कुछ मधुर ध्वनियाँ अथवा प्रिय शब्द कानों को थोड़ा सन्तोष दे देते हैं। मिष्टान्न का स्वाद जिह्वा को किंचित् तृप्ति दे देता है। कुछ सुखद कोमल स्पर्श त्वचा को हलका-सा आनन्द दे जाते हैं। अर्थात् ये किंचित् प्रिय लगने वाले रसास्वाद, सुगन्ध, स्पर्श, श्रवण और दर्शन अल्प मात्र ही इन्द्रिय-सन्तोष देते हैं। यह ऐन्द्रिक सन्तोष सुख नहीं है, आनन्द नहीं है। यह केवल भौतिक स्तर तक ही है। यह एक जैविक प्रक्रिया है जो पूर्णरूपेण आपकी स्नायविक रचना पर निर्भर करती है। स्नायविक रचना इस पशु-ढाँचे का ही एक हिस्सा है।

भौतिक शरीर आपके व्यक्तित्व का पशु-ढाँचा ही है। यदि आपकी स्नायु-तन्त्री का कोई भाग काम न करता हो, तो आपको यह संवेदनात्मक अनुभूति नहीं होगी। अतः ये पंचेन्द्रिय अनुभव भौतिक स्नायविक प्रक्रिया के कारण ही होते हैं। इसे सुख नहीं कहा जाता। सुख सत्ता की अन्तर्मुखी अवस्था है; मन और हृदय की आभ्यन्तर्मुखी अवस्था है। कभी-कभी जब कोई कारण भी उपस्थित नहीं रहता, तब भी यह आपके अन्तर से उमड़ता रहता है। कभी-कभी जब आप अकेले बैठे रहते हैं और आपके मन को कोई इच्छा परेशान नहीं कर रही होती, कोई चाहना अन्तर में नहीं होतीह्वह्वआप अपने में शान्त बैठे रहते हैं, ऐसे इन क्षणों में आप अपने अन्तर में एक दुर्लभ उल्लास का अनुभव करेंगे। यह आनन्द विषयों की अनुपस्थिति से आता है।

यह महान् सत्य है कि आनन्द भीतर है और सुख आपकी सत्ता के ही केन्द्र में है जिसे भीतर ही खोजना होगाह्वह्वबाहर नहीं। व्यक्ति जितना ही बाहर दौड़ता है, आवश्यकताएँ उतनी ही बढ़ती हैं और सुख-शान्ति से व्यक्ति उतना ही दूर हो जाता है। हमारे गुरुदेव के उपदेशों में यह सत्य हर एक को दिया गया है। परन्तु वे एक यथार्थवादी और व्यावहारिक पुरुष थे। अतः यद्यपि उन्होंने आत्म-साक्षात्कार का यह महान् आदर्श प्रस्तुत किया, तथापि वे जानते थे कि मनुष्य को अपना सामान्य जीवन भी यापन करना है। इसलिए उन्होंने दैनिक जीवन यापन हेतु कुछ व्यावहारिक सिद्धान्त भी बताये हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अपने सामान्य जीवन के कार्यों को, कर्तव्यों को, घरेलू, सामाजिक और व्यवसायगत कर्तव्यों को सम्पन्न करते हुए भी क्रमशः आत्म-नियन्त्रण और आत्मिक अनुशासन की अवस्था में आ जाता है।

यह क्रमिक अनुशासन जो उन्होंने मनुष्य को दिया, इसमें उनके दिव्य जीवन के उपदेशों का सार है। उनके नियम तथा उपनियम साम्प्रदायिक भावना से रहित हैं, अतः वे जिस धर्म में किसी व्यक्ति ने जन्म

लिया है अथवा जिस धर्म और निष्ठा की वह साधना कर रहा है, उसमें किसी तरह की बाधा नहीं डालते। ये दिव्य जीवन के सिद्धान्त ऐसे हैं जो किसी के मत या धर्म को प्रभावित नहीं करते और व्यक्ति उन्हें अपने स्वयं के जीवन में उतार सकता है, आत्मसात् कर सकता है। इन उपदेशों को उन्होंने बीस निर्देशों में एकत्र कर दिया है और इन बीस आध्यात्मिक निर्देशों में उन्होंने सभी सन्त-महात्माओं के उपदेशों का सार-तत्त्व संकलित कर दिया है। उन्होंने बताया कि दैनिक जीवन का यही धर्म है। उन्होंने कहा कि यही धर्म की साधना और धर्म का विज्ञान है और इन नियमों को अपनाने से व्यक्ति सुख-शान्ति की ओर बढ़ता तथा दुःख और कष्टों से दूर हो जाता है।

आप दयालु बनें और मैत्री-भावना से पूर्ण रहें। किसी से घृणा न करें। कोई आपको अप्रिय न लगे। दूसरों में सद्गुण देखिए; उनके अवगुणों पर ध्यान न दीजिए। कोई पूर्ण निर्दोष नहीं है। कोई जिम्मेवार भी नहीं है; क्योंकि वह जैसा भी है, ईश्वर का बनाया है। अतः हर चीज को उदार दृष्टि से देखिए। शुभ देखिए और मिथ्यात्व की उपेक्षा कीजिए। मिथ्यात्व देखना ही हो तो जो स्वयं में है, उसे देखिए। उसे दूर करने का प्रयत्न कीजिए और निर्दोष बन जाइए। इस प्रकार दैनिक जीवन में सहृदयता का अभ्यास कीजिए।

आपकी वाणी क्रोध-रहित और मृदु हो। मधुरता और विनम्रतापूर्वक बोलिए। लोगों को क्षमा कीजिए। सदैव सेवा करने का यत्न कीजिए। सत्यनिष्ठ बनिए और इस प्रकार सबकी निःस्वार्थ सेवा द्वारा, कृपालुता और दयालुता के अभ्यास द्वारा, मधुर वचनों द्वारा अपना हृदय शुद्ध कीजिए। इस अखिल विश्व का जो स्रोत है, उस परम सार्वभौम सत्ता के लिए गहरा प्रेम बढ़ाइए। वही आपकी सत्ता और इस विश्व के अस्तित्व का आधार है। उसके दर्शन करके, उसे उपलब्ध करके व्यक्ति पूर्णता को उपलब्ध होता है। इस वर्तमान स्थिति में, आप अपनी सत्ता के उस स्रोत से विच्छिन्न हो जाने के कारण अपूर्ण हैं। आपके जीवन में पूर्णता और अखण्डता तब आयेगी, जब आप पुनः उससे अपना आध्यात्मिक सम्पर्क और सम्बन्ध बना लेंगे। अतः उसके अनुभव को प्राप्त करने के लिए महा-आकांक्षा और तीव्र लालसा उत्पन्न कीजिए। यह आन्तरिक क्षुधा, यह आन्तरिक भक्ति आन्तरिक जीवन की साधना द्वारा विकसित कीजिए।

अपने अन्तर में सजीव रहिए और आन्तर जीवन का विकास कीजिए। प्रार्थना के माध्यम से, दैनिक चिन्तन के माध्यम से, आन्तरिक भक्ति-भावना द्वारा प्रगति कीजिए और उस परम दिव्य सत्ता को सदैव अनवरत रूप से स्मरण रखने का अभ्यास कीजिए। अपने दैनिक जीवन में भी कीजिए। अपने अन्तर को इसी शाश्वत परम तत्त्व में विश्राम लेने दीजिए। ऐसा जीवन ही दिव्य जीवन कहा जाता है; क्योंकि यह ऐसा जीवन है जो आपको दिव्य अनुभव की ओर ले जाता है। यह जीवन, आपमें जो आपका दिव्य स्वरूप है, उसे प्रकाशित करता है। यह ऐसा जीवन है जो आपके जीवन का जो आध्यात्मिक लक्ष्य है, उस लक्ष्य-बोध के साथ यापन किया जाता है। यह वह जीवन है जिसमें मन, वचन और कर्म द्वारा आप अपने भीतर की दिव्यता को अभिव्यंजित करते हैंह्नह्नजीवन जिसमें अन्तर से सौन्दर्य, प्रेम और आनन्द अभिव्यक्त होता है।

अब जीवन आपके क्षुद्र, स्वार्थी स्वभाव की अभिव्यंजना की प्रक्रिया मात्र नहीं रह जाता। वह क्षुद्र कोटि के स्वार्थपूर्ण कार्यों की, क्रोध की झुँझलाहट की, कठोर शब्दों की, लड़ाई-झगड़ों की, मन-मुटौवल या ईर्ष्या-द्वेष, उग्रता और अशान्ति की प्रक्रिया नहीं रह जाता; बल्कि दयालुता, सहृदयता, मैत्री, प्रेम, निःस्वार्थ सेवापरायणता, दूसरों को सुखी बना देने की इच्छा और दूसरों के लिए अधिकाधिक मात्रा में स्वयं को उपादेय बना लेने का जीवन हो जाता है। ऐसा जीवन ही दिव्य जीवन कहा जाता है। आप स्वयं के लिए ही शुभ बन जाते हैं, अपने घर में आनन्द ले आते हैं, अपने माता-पिता और स्व-जनों के लिए सुख का साधन बन जाते हैं। अपने पड़ोसियों के लिए, अपने मित्रों में, समाज में, अर्थात् अपने कर्म के समस्त क्षेत्रों में आप मैत्री, प्रेम और आनन्द ले आते हैं। आप कल्याण-केन्द्र की भाँति विचरण करते हैं, स्वयं को आनन्द और शान्ति से पूर्ण करते हैं, दूसरों के लिए भी सुख-शान्ति लाते हैं। परन्तु यह सब करने के लिए आत्मानुशासन की अपेक्षा है।

आप अपनी ही इन्द्रियों के दास हैं तो आप ऐसा जीवन नहीं बिता सकते। अतः आपको अपनी इन्द्रियों पर, मन पर, मन की इच्छाओं पर, अहं पर और अहंपरता पर नियन्त्रण करना होगा। लेकिन आप यह न सोचें कि यह नियन्त्रण कुछ संन्यासियों और संन्यासिनियों की कठोर तपश्चर्या जैसा होगा। इससे सर्वथा भिन्न, यह अनुशासन तो वास्तविक सभ्यता का लक्षण है, वास्तविक शिक्षा का सूचक है। स्वयं पर अपना ही इस प्रकार का नियन्त्रण तथा अनुशासन और दूसरों को सुखी करने की महत्त्वाकांक्षा के समक्ष अपनी इच्छाओं का त्याग ही वास्तविक संस्कृति का सार-तत्त्व है। सभ्यता, शिक्षा, संस्कृतिह्लह्लऐसे विवेकसम्मत आत्मानुशासन पर ही प्रतिष्ठित हैं। इस तरह का आत्मानुशासन ही जीवन को जीने योग्य बनाता है।

जिस समाज या समुदाय में इस प्रकार के आत्मानुशासित स्त्री-पुरुष रहते हैं, वह समाज या समुदाय वास्तव में समृद्ध और सम्पन्न होता है। यह संसार का निषेध करने वाला दर्शन नहीं है; क्योंकि भूलिए मत, याद रखिए, अस्थायी निषेध से आप सुख और आनन्द की स्थायी अवस्था की ओर बढ़ेंगे। यह संयम और निषेध केवल संयम और निषेध के लिए ही नहीं है; बल्कि जैसा आप जानते हैं, वास्तविक आनन्द की उपलब्धि का यही मार्ग है।

इस प्रकार ध्येय आनन्द है, सुख है, शान्ति तथा परिपूर्णत्व है। यही आत्म-पथ है, यही दिव्य जीवन है। **(अनूदित)**

इन्द्रियानुभूति की प्रामाणिकता नहीं है। इससे उत्पन्न ज्ञान अपने-आपमें एक धोखा है। इन्द्रियों के द्वार बन्द कीजिए, मन का कपाट बन्द कीजिए, अपने अन्तस्तल में ज्ञान-दीप को प्रज्वलित कीजिएह्लह्लइस तरह आप ईश्वर के सम्मुख खड़े होंगे।

स्वामी शिवानन्द

स्वामी शिवानन्द का दार्शनिक चिन्तन

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

दर्शन का लक्ष्य सम्यक् जीवन है। यथार्थ दर्शन से यह अपेक्षा की जाती है कि वह व्यक्ति को यथा-सम्भव सत्यमय जीवनह्वह्वत्यागमय, अदार्शनिक जीवन की अपूर्णताओं से मुक्तह्वह्वजीवन जीने के योग्य बनायेगा। दर्शन न तो बौद्धिक विचलन है और न एक ऐसा शास्त्रीय विद्याडम्बर जो जगत् के अनुभवगत तथ्यों की अनदेखी कर देता है। वह न तो थोथे पाण्डित्य का साहसिक कार्य है और न चिन्तामुक्त मस्तिष्क का शौक। वह है समग्र जीवन के तात्कालिक तथ्यों का बुद्धिमत्तापूर्ण विश्लेषण, अनुभवों के निहितार्थों का परीक्षण तथा एक ऐसा वैज्ञानिक सिद्धान्त जिसे व्यक्ति की चेतना की विभिन्न घटनाओं के लिए उत्तरदायी कार्यों के नियमन के उद्देश्य से किये गये चिन्तन-मनन से विकसित किया गया है। अतएव दर्शन पूर्ण जीवन की महान् कला हैह्वह्वऐसा जीवन जिसमें इसके (जीवन के) प्रति निर्मित सामान्य धारणा के परे पहुँच कर परम सत्ता (जिसका अस्तित्व मात्र से तादात्म्य है) का साक्षात्कार होता है।

स्वामी शिवानन्द इस प्रकार के महान् वेदान्त-दर्शन के प्रभावकारी प्रवक्ता थे। वह एक आदर्श व्यक्ति थे। वह वेदान्त द्वारा इंगित लक्ष्य के अनुभव में संस्थित थे। उनका जीवन और शिक्षा समग्र जीवन के विभिन्न पहलुओं के सुन्दर समन्वय से प्रदीप्त थे। स्वामी शिवानन्द का वेदान्त-दर्शन न तो स्वप्निल, आत्मगत और भ्रम का संसार-विमुख सिद्धान्त है और न साहचर्यवाद का अपरिष्कृत, इन्द्रियों की महत्ता तथा सांसारिकता को स्वीकार करने वाला सिद्धान्त ही है। उनका दर्शन ब्रह्माण्ड की दिव्यता, मानवात्मा के अमरत्वह्वह्वजो पूर्णात्मा से एकाकार हैह्वह्वऔर परम सत्ता के साथ अनिवार्य एकता का दर्शन है। यह ध्यान रखते हुए कि मानव-जीवन प्रारम्भ से अन्त तक सत्ता के विभिन्न सोपानों से आबद्ध है, उन्होंने इस लक्ष्य की ओर लोगों के जीवन को परिचालित किया था।

उनके जीवन का अद्वितीय और प्रेरक पक्ष, जिसे उन्होंने सदैव अपने जीवन द्वारा प्रस्तुत किया था, यह है जीवनानुभव का कोई भाग उपेक्षणीय नहीं है। जो दर्शन कुछ पहलुओं की देखी-अनदेखी कर देता है, वह अधूरा तथा अपूर्ण है और इसलिए जीवन-विज्ञान माने जाने योग्य नहीं है। स्वामी शिवानन्द जिज्ञासुओं को जीवन के परमोद्देश्य की ओर प्रेरित करते थे और वस्तुगतः वास्तविकताओं से जो महान् आदर्शवादियों के सम्मुख भी उपस्थित होती हैंह्वह्वजूझने में संकोच न करने का उपदेश देते थे। वह कहते थे कि वास्तविकता के प्रत्येक सोपान का समादर दिया जाना चाहिए, अन्यथा वह (सोपान) ऊपर की ओर दृष्टि किये हुए चलने वाले दम्भी जिज्ञासु के प्रति विद्रोह कर देगा। स्वामी शिवानन्द औपनिषदिक ज्ञान तथा सांसारिक जगत् के व्यावहारिक व्यक्ति के मिलन-बिन्दु थे।

वेदान्त न तो भौतिक जगत् की हृदय-विदारक स्थितियों के प्रति आँख मूँदता है और न मन-मस्तिष्क

द्वारा अनुभवगम्य जीवन के अधोगामी आकर्षण के प्रति असावधान रहता है, यद्यपि वेदान्त का क्षेत्र ऐहिक जगत् से परे है। वेदान्त पारलौकिक हैह्वह्व इसलिए नहीं कि वह अनुभवातीत अहं से भौतिक पदार्थों को हेय दृष्टि से देखता है, अपितु इसलिए कि यह पतित बन्धुओं के ऐहिक जीवन का रूपान्तरण करके समस्त ज्ञान तथा प्रेम द्वारा उनका हृदयालिंगन करता है। हाँ, वह तब तक अपने भ्राताओं का आलिंगन नहीं करेगा जब तक कि वह दिव्य जीवन के चमत्कारिक स्पर्श से रूपान्तरित नहीं हो जाता। जब जगत् स्वयं की सीमाओं से मुक्त हो जाता है, तब वह ब्रह्म में समाविष्ट हो जाता है।

अपने जीवन-सागर में गहरी डुबकी लगाने वाले व्यक्ति की तरह स्वामी शिवानन्द हमें सिखाते थे कि अभिव्यक्ति के स्तरों पर ब्रह्म ही जगत् के रूप में भासमान है; अतएव ऊर्ध्व की ओर गति करने से पूर्व साधक को निम्न अभिव्यक्तियों को भी नमन करना चाहिए। वेदान्त की शिक्षाओं के अनुसार सुघड़ स्वास्थ्य, स्पष्ट समझ, गहन ज्ञान, प्रभावकारी इच्छा-शक्ति और नैतिक दृढ़ताहृह्वये सभी आदर्श के साक्षात्कार की प्रक्रिया के भाग हैं। इस विलक्षण जीवन के महत्त्व को स्वामी शिवानन्द जी द्वारा अच्छी तरह समझाया गया है, जब वे अधोमुखी आत्मा (lowerself) के सर्वांग अनुशासन की बात करते हैं। 'ए लिटल' शीर्षक से उनका एक गीत है, जिसमें वे बताते हैं कि मानव-प्रकृति के विभिन्न पहलुओं का सामानान्तर विकास आवश्यक है। उनका वेदान्त योग, भक्ति और कर्म का विरोधी नहीं है। उनके दर्शन में ये सब अनुभव के अनेक स्तरों पर सम्पूर्ण को निर्मित करने वाले तत्त्वों के रूप में संयुक्त हैं। 'सामंजस्य तथा अनुकूलन', 'प्रत्येक वस्तु में शुभ का दर्शन', 'मानव-ऊर्जा के संघटित संयोजन के साथ-साथ आत्म-साक्षात्कार की दिशा में व्यक्ति के विकास के लिए प्रकृति के सभी नियमों का प्रभावकारी उपयोग करना'हृह्वये प्रमुख अवधारणाएँ उनके जीवन-दर्शन को निर्मित करती हैं।

यद्यपि वह निरपेक्षतावादी तत्त्वमीमांसा के चरम शिखर पर संस्थित थे, तथापि उन जैसे व्यावहारिक व्यक्ति को ढूँढ़ पाना कठिन है। वह एक आदर्शवादी-यथार्थवादी, एक लोकोपकारी दार्शनिक तथा विपरीतताओं के अद्भुत मिश्रण थे। इस कारण वह एक ऐसी माँ के सदृश थे जो अपनी झगड़ालू सन्तानों को साथ-साथ सँभाले रखती है। सबको प्यार करें, सबमें परमात्म-दर्शन करें, सबकी सेवा करें, क्योंकि सब भगवद्-स्वरूप हैं तथा ईश्वर को सभी की एकात्मता (identity) मानते हुए उसकी पूर्णता का साक्षात्कार करेंहृह्वये उनके मुख्य सिद्धान्त हैं। उनका वेदान्त ज्ञान की पराकाष्ठा है तथा दार्शनिक विश्लेषण से उपलब्ध ब्रह्म-साक्षात्कार की अभिव्यक्ति है। यह विश्लेषण मस्तिष्क की अन्यमनस्कता के अभाव में और ईश्वर की निष्ठापूर्वक उपासना करने से सम्भव हो पाता है। इस भक्ति की प्राप्ति आत्म-शुद्धि के बिना सम्भव नहीं है। आत्म-शुद्धि आवश्यक कर्तव्य-कर्मों केहृह्वजिसे निरपवाद रूप से सभी लोगों को पूरा करना होता हैहृह्वनिःस्वार्थ सम्पादन से प्राप्त होती है। जिज्ञासु लोगों के लिए अवरोधमुक्त रहते हुए पूर्णत्व के साक्षात्कार की अपनी महान् आध्यात्मिक मंजिल पर पहुँचने के उद्देश्य से अपनी चेतना की दैहिक, जैविक,

मानसिक तथा बौद्धिक स्थितियों पर विजय तथा स्वामित्व प्राप्त करने के लिए उन्होंने कुछ पद्धतियाँ प्रस्तुत की हैं।

स्वामी शिवानन्द दर्शन की विभिन्न धाराओं को अद्वैत ब्रह्म की ओर ले जाने वाले और दर्शन का आंशिक प्रतिनिधित्व करने वाले सोपानों के रूप में स्वीकार करते हैं। अतएव उनका दर्शन यथार्थवाद (realism) है : भौतिक जगत् वैयक्तिक मन से स्वतन्त्र है। व्यक्ति की दृष्टि से यह भौतिक है; किन्तु अन्ततः यह आध्यात्मिक यथार्थ का एक रूप है। यह आदर्शवाद (idealism) है : जगत् ब्रह्माण्डीय चित्त की अभिव्यक्ति है और जीवन के मूल्य वैयक्तिक चित्त की अभिव्यक्तियाँ हैं। यह अनुभववाद (empiricism) है : व्यक्ति बाह्य भौतिक जगत् से संवेदनाओं को ग्रहण करता है। यह जगत् उसके चिन्तन से पृथक् तथा स्वतन्त्र है। परमात्मा मानव से परे है और जगत् के रूप में भासित होता है। यह तर्कबुद्धिवाद (rationalism) है : वैयक्तिक ज्ञान के रूप में वैयक्तिक चित्त की प्रकृति के निमित्त होते हैं, तथापि सम्पूर्ण जगत् का निर्धारण ब्रह्माण्डीय चित्त के अनिवार्य और जागतिक नियमों द्वारा होता है। यह संकल्पवाद (voluntarism) है : इच्छा का आवेग मानव-स्वभाव पर शासन करता है और उसे कष्ट देता है। मनुष्य में इच्छाओं से उत्पन्न ललक उसकी बुद्धि के कार्यों को नियन्त्रित करती है और मनोवैज्ञानिक चेतना के अचेतन धरातल में डूबी इच्छाओं को बुद्धिसंगत बनाती है, यद्यपि इच्छाओं को उच्च तर्क और विवेक द्वारा जीता जा सकता है।

यह द्वैतवाद (dualism) है : जहाँ तक जगत् में मानव-जीवन का सम्बन्ध है, इन्द्रियग्राह्य तथा बुद्धिग्राह्य विषयों, पदार्थ और मन, नर और नारायण, यथार्थ और सम्भव तथा भासमान और यथार्थ के मध्य भेद है। अतएव जागतिक नियमों का, जो घटनाओं से परे हैं, पालन करना होता है। केवल आत्म-साक्षात्कार की स्थिति में यह भेद विलीन होता है। यह यथार्थ-आदर्शवाद (realistic idealism) है : 'जो है', वह शुद्ध चेतना से भिन्न नहीं है। समस्त अस्तित्व इसके अधीन है। जगत् यथार्थ पर निर्भर है। परमात्मा जगत् का गतिशील कारण है। यह व्यावहारिकतावाद (pragmatism) है : सत्य का व्यावहारिक मूल्य भी है। इन्द्रिय-जगत् एक व्यावहारिक सत्ता है; क्योंकि इसमें सकल कर्मों का सम्पादन होता है। ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया जाना चाहिए। यह परिकल्पना जीवन के लिए अपरिहार्य है। यह अनियतत्ववाद (indeterminism) है : मनुष्य की सारभूत प्रकृति आध्यात्मिक चेतना है जो जगत् के समस्त संकल्पों-नियतियों से परे तथा मुक्त है। यह नियतत्ववाद (determinism) है : सापेक्ष व्यक्ति मन और देह में सीमित है। मन-देह जागतिक नियमों से संचालित होते हैं। यह विकासवाद (evolutionism) है : समस्त वस्तुएँ विकासजन्य हैं और पूर्णता की ओर अन्तिम आरोहण में अनेक अग्रवर्ती तथा पश्चगामी गतियों के रूपों में अपने को उद्घाटित करती हैं। इसको दृश्य-प्रपंचवाद (phenomenalism) कहते हैं : इन्द्रिय-जगत् परम सत्ता के परिवर्तनशील दृश्यप्रपंचों का क्षेत्र है और मानवीय ज्ञान इन दृश्यप्रपंचों से मर्यादित है। यह परात्परवाद (transcendentalism) है : परम सत्ता जगत् की सभी श्रेणियों से परे है। इसे अन्तर्व्यापकवाद (immanentism) कहते हैं। ईश्वर जगत् में अन्तर्व्याप्त है तथा उसे अनुप्राणित करता है।

यह अज्ञेयवाद (agnosticism) है : यथार्थ सत्ता मानव-चिन्तन के लिए अगम्य है। यह रहस्यवाद (mysticism) है : परम सत्ता का साक्षात्कार आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि और उसमें स्थित होने से प्राप्त किया जा सकता है। यह जगत्-ईशवाद (pantheism) है : जगत् की वस्तुएँ ईश्वर से बाह्य नहीं हैं। यह ईश्वरवाद (theism) है : ईश्वर जगत् के प्रकटीकरण का कारण-रूप है और वह स्वामी के रूप में उस पर शासन करता है। यह निरपेक्षवाद (absolutism) है : पूर्णब्रह्म ही एकमात्र यथार्थ है और चेतना उसका सारतत्त्व है। जगत् और व्यक्ति उसकी अभिव्यक्तियाँ हैं। यह यन्त्रवाद (mechanistic) है : इन्द्रियानुभूति के जगत् में घटनाएँ दिक्कालों के नियमों का अनुसरण करती हैं। यह सोद्देश्यवाद (teleology) है : समस्त गतियाँ और कृतियाँ ईश्वर द्वारा निर्देशित हैं। ईश्वर वह अन्तिम कारण है जो अपनी सत्ता के नियम से जगत् का निर्धारण करता है। उसकी सत्ता के साथ जगत् आंगिक रूप से सम्बन्धित है।

स्वामी शिवानन्द का वेदान्त सभी दार्शनिक सिद्धान्तों को कुछ शर्तों के साथ पूर्ण सत्य के बजाय सत्य के विविध आयामों के रूप में स्वीकार करता है। उनका वेदान्त-दर्शन सभी दर्शनों का समन्वय है। साथ ही यह अद्वैत चेतना का एक ऐसा दर्शन भी है जो अपने परम सत्त्व में समस्त अस्तित्व को समाहित कर लेता है। वास्तविक धर्म इस दर्शन का व्यवहार-पक्ष है और शिवानन्द का धर्म वैश्व-धर्म है जो समस्त मानव-प्राणियों पर उनकी चेतना के विकास के अनुपात में चरितार्थ होता है। स्वामी शिवानन्द के दर्शन और शिक्षाओं में श्रद्धा, तर्क और अनुभव; सिद्धान्त और व्यवहार; कला और धर्म; सेवा, प्रेम और दान, शुचिता, चिन्तन-मनन, ध्यान और साक्षात्कार साथ-साथ विद्यमान रहते हैं।

सन्त शिवानन्द का वेदान्त-दर्शन जगत् का 'सिद्धान्त' मात्र न हो कर व्यावहारिक तथा जीवन्त दर्शन है। यह सिद्धान्त नहीं, वरन् व्यावहारिक जीवन की प्रकृति का उद्घाटन है। आध्यात्मिक जीवन के इस प्रकार के परिपूर्ण आदर्श को हम श्री कृष्ण के जीवन और भगवद्गीता के वर्णनों में पाते हैं।

स्वामी शिवानन्द इसी प्रकार के पूर्ण पुरुष के उदाहरण हैं। उनके लिए वेदान्त जीवन की एक व्याख्या है। इस रूप में वे उन लोगों से भिन्न हैं जो दर्शन को जीवन से असम्बद्ध मानते हैं और जो सोचते हैं कि वेदान्त का जगत् के अस्तित्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। स्वामी शिवानन्द का वेदान्त एक ऐसा विज्ञान है जो मानव-पुरुषार्थ के सही मूल्य और अर्थ को उद्घाटित तथा अनुभव के क्षेत्र में मूर्तिमान अस्तित्व के महत्त्व को प्रकट करता है। उनका वेदान्त ऐसे परमानन्दमय परम तत्त्व की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से प्रशंसनीय तथा यशस्वी जीवन जीने की क्षमता प्रदान करता है जिसमें जगत् आत्मवत् भासित होता है, जिसके लिए आत्मा के अतिरिक्त किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं है और जिसके साक्षात्कार के परिणाम-स्वरूप ऋषि समस्त प्राणियों का परित्राता बन जाता है।

(अनुवादक : श्री योगेशचन्द्र बहुगुणा)

त्याग का अभिमान धन के अभिमान से भी ज्यादा खतरनाक है। **स्वामी शिवानन्द**

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

स्वास्थ्य और ब्रह्मचर्य ३

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

सूर्य की किरणों से आँखों की ज्योति बढ़ती है

आँखों का अधिष्ठातृ देव सूर्य है। वह स्वास्थ्य, तेज और जीवन-शक्ति देता है। रोज सुबह-शाम आँखें बन्द करके धूप में बैठो। शिर को बायें और दायें कन्धों की ओर धीरे-धीरे बारी-बारी से झुकाओ। लगभग दश मिनट तक अपनी बन्द आँखों पर सूर्य की किरणें पड़ने दो।

अब छाया में आ जाओ। अपनी हथेली से दोनों आँखों को लगभग पाँच मिनट तक ढके रखो। ऐसा करते समय आँख की पुतली पर कोई दबाव न पड़ने पाये।

इससे देखने की शक्ति बढ़ेगी। चश्मे की आवश्यकता नहीं रहेगी। एक या दो सप्ताह तक इसका अभ्यास करो। यह अभ्यास एक महीने तक भी जारी रख सकते हो।

प्राथमिक उपचार सीखो

स्काउट बनो। प्राथमिक उपचार सीखो। कोई दुर्घटनाग्रस्त हो जाये, तो उसकी सेवा कर सकते हो। पट्टी बाँधना सीखो। खून बहता हो, तो कपड़े का टुकड़ा तह करके खून को उससे या रूई से दबा कर रोको और उस पर पट्टी बाँध दो। कहीं कट जाये, तो साफ पानी से धोओ और आयोडीन या टिंचर बेन्ज़ाइन लगाओ।

अवस्तार (स्ट्रेचर) न हो, तो उसके स्थान में कोट काम में लाओ। नाक से खून बहता हो, तो नाक की ऊपरी हड्डी पर और गरदन के पीछे के भाग पर बरफ का टुकड़ा रखो। स्तब्धता (शाक) की दशा में रोगी को कम्बल से लपेट कर उसका शरीर खूब गरम करो। गरम काफी या चाय पिलाओ।

खून को बहने से रोकने के लिए फिटकरी के घोल का प्रयोग करो। यह घोल तैयार करके कपड़े या रूई का टुकड़ा उसमें भिगो लो। फिर इस भीगे हुए कपड़े को घाव पर रख कर पट्टी बाँध दो।

सस्ते छोटे डाक्टर

हर मामूली तकलीफ में डाक्टर के पास दौड़ना अच्छा नहीं। तुम स्वयं डाक्टर बनो। एक दिन उपवास रखो। उससे कई रोग अच्छे हो जायेंगे।

कब्ज में त्रिफला का चूर्ण गरम दूध या पानी के साथ लो। दूध में शहद मिला कर लो। अपच हो तो सुबह उठते ही खाली पेट ताजी अदरक के कुछ टुकड़े चीनी के साथ खाओ। कान से मवाद बहता हो, तो उसमें लहसुन या नीम के तेल की कुछ बूँदें डालो।

मसूड़े फूल जायें, तो सरसों का तेल और नमक मिला कर उन पर उँगली से रगड़ो। इस तेल का उपयोग गठिया में भी कर सकते हो। तेल को धूप में पका लो। दाँतों में खड्ड हो गया हो, तो उसमें थोड़ा-सा कपूर दबा दो।

स्तब्धता (शाक) का उपचार

रोगी के स्वास्थ्य-लाभ के लिए प्रार्थना करो। उसके पास बैठ कर कीर्तन करो। उसे सीधा लिटा दो। गरदन, छाती और कमर पर से कपड़ा ढीला कर दो जिससे कि रोगी आसानी से साँस ले सके।

रोगी को ऊनी कम्बल से लपेट दो। शरीर के दोनों पार्श्वों तथा पैरों के पास गरम पानी की बोतलें रखो। बोतलों को कपड़े से ढक दो। उनका असर शरीर की चमड़ी पर न होने पाये।

रोगी यदि पी सके, तो उसे गरम काफी या चाय पिलाओ। उसके पैर, हाथ और छाती पर तारपीन के तेल की मालिश धीरे-धीरे करो। उसे उठने न दो। उसके उठने से उसकी हृदय-गति बन्द हो सकती है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

दिव्योपदेश

'मैं शरीर हूँ'ह्ह्यह सोचना अविद्या है। 'मैं परम शुद्ध चैतन्य हूँ'ह्ह्यह सोचना विद्या है।

जीवनोपयोगी दर्शन ही धर्म कहलाता है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि हम आत्मिक स्वतन्त्रता का मूल्य चुका कर सांसारिक सुखों को खरीदते हैं।

आध्यात्मिक अभ्युत्थान के लिए दो ही सहायक तत्त्व हैंह्ह्सेवा और त्याग-भाव।

आत्मा को शब्दों की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता। यह तो अनुभूतियों द्वारा गम्य है।

अपनी इच्छा पूरी करके कोई मनुष्य पूर्ण नहीं बन सकताह्ह्अपूर्णता और असन्तोष उसे सताते ही रहेंगे। इच्छा के विमोचन में ही सुख है।

अपने हृदय-क्षेत्र में भक्ति-भाव के बीज बोइए, इसे लगन से सींचिए। इसके चारों ओर सत्संग की बाड़ लगा दीजिए, जिससे कामादि विकारों के रूप में पशुओं का प्रवेश न हो सके। यदि आप ऐसा करेंगे, तो कालान्तर में शान्ति और आमोद की फसल आपके हाथ लगेगी।

क्या आप ईश्वर से तादात्म्य चाहते हैं? फिर तो आपको तृण की भाँति नम्र, शिशु की भाँति निर्दोष और गोपियों की भाँति अनुरक्त बनना पड़ेगा।

यदि आप ब्रह्म-साक्षात्कार करते हैं तो यह आपकी बौद्धिक खोज ही नहीं, आध्यात्मिक विजय भी मानी जायेगी।

स्वामी शिवानन्द

योग द्वारा स्वास्थ्य :

उज्जायी

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

विधि

किसी सुखद आसन में बैठें। मुँह-नेत्र बन्द करें। कण्ठ-द्वार की आंशिक बन्दी के कारण श्वास खींचने के समय उत्पन्न ध्वनि पर ध्यान केन्द्रित करें। निर्बाध और एकरूप से दोनों नासा-पुटों से श्वास खींचें। श्वास लेते समय उत्पन्न ध्वनि निरन्तर और एक-समान होनी चाहिए। जब आप श्वास लें, तो वक्ष फुलायें। भीतर आगत वायु के संचार की अनुभूति ऊपरी तालु पर होती है और सीत्कार ध्वनिकारक होती है। ध्यान रखना चाहिए कि श्वास भीतर खींचते समय पेट न फूले। अब श्वास को गहराई से एवं सामान्य गति से दोनों नासारन्ध्रों के द्वारा धीरे-धीरे निकालें। कुछ दिनों के अभ्यास के पश्चात् दाहिने अँगूठे से दाहिना नासा-पुट बन्द करने के बाद आप बायें नासा-पुट के द्वारा भी रेचक कर सकते हैं। प्रारम्भ में यह प्रक्रिया पाँच से दश बार करें और अपनी क्षमता के अनुसार संख्या बढ़ायें।

लाभ

यह प्राणायाम फुप्फुसों में वायु भरता, स्नायुओं को प्रशान्त एवं समस्त शरीर को आरोग्य करता है। विश्राम की स्थिति में करने पर यह उच्च रक्तचाप या हृद्-धमनी की व्याधियों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए उत्तम है।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

शिवानन्द-वचनामृत

श्रद्धा के माध्यम से माया का वह आवरण हटा दीजिए जो ईश्वर पर छाया हुआ है। अब आप उनसे सम्पर्क स्थापित कीजिए और उनमें समा जाइए, यही आपका गन्तव्य रहे!

श्रद्धा के बिना की गयी प्रार्थना 'अरण्य-रोदन' है।

सहृदयता से आप महान् बनते हैं, जब कि दानवता का दामन पकड़ कर आप पशुओं की कोटि में पहुँचते हैं।

जब नाम और रूपों का नाटक खतम होता है, तब ब्रह्मविद्या का अवतरण होता है।

'अपने स्वरूप को पहचानें'ह्नह्नयही आपकी बुद्धिमत्ता है।

जब आपमें दिव्य गुणों की श्रीवृद्धि होगी, तो मन वैषयिक सुखों से अपने-आप सिमट जायेगा।

बाल-स्तम्भ :

कैसा था वह बालक!

स्वामी रामराज्यम्

एक ग्रामीण बालक था। उसकी उम्र थी लगभग नौ-दस साल। एक दिन वह शाम के धुँधलके में अकेला घर लौट रहा था। तभी उसका पैर किसी चीज से टकराया। उसने झुक कर देखाह्वह्वएक छोटी-सी थैली पड़ी है। उसने थैली उठा ली। उसने थैली को टटोल कर देखा। कुछ समझ में नहीं आया कि उसमें क्या है। उसे ले कर वह अपने घर आया। घर में माँ के अलावा और कोई नहीं था। माँ रसोई में खाना बना रही थी। वह बैठक में गया। लालटेन की रोशनी में उसने थैली खोली। उसमें नोट ही नोट थे। वह सोचने लगाह्वह्वक्या करूँ? क्या माँ को बताऊँ? यदि माँ ने कह दिया कि घर में रख लो, तो थैली के मालिक को कैसे मिल पायेगी उसकी थैली? ठीक है, मैं इसे बिस्तरे में छिपा कर रखे देता हूँ और बाहर निकल कर देखता हूँ। शायद थैली का मालिक दिखायी पड़ जाये।

थैली घर में छोड़ कर वह बाहर आया। उसने देखा कि सामने गलियारे में दो व्यक्ति टार्च की रोशनी में कुछ ढूँढ़ रहे हैं। वे व्यक्ति उसके गाँव के नहीं थे। वह उन्हें नहीं पहचानता था। उसने सोचाह्वह्वथैली कहीं इन लोगों की तो नहीं है। वह दबे पाँव उन दोनों के पास पहुँचा और धीरे से बोलाह्वह्व''क्या ढूँढ़ रहे हैं?'' उन दोनों ने बालक की ओर देखा। फिर बिना कोई उत्तर दिये हुए वे टार्च की रोशनी में जमीन में आँखें गड़ाये हुए आगे बढ़ गये। बालक उनके पीछे हो लिया। वे दोनों आगे बढ़ते जा रहे थे। बालक ने फिर पूछाह्वह्व''आपकी कोई चीज खो गयी है क्या?'' उन्होंने कहाह्वह्व''तू अपने रास्ते पर जा।''

अब बालक ने सीधा सवाल पूछाह्वह्व''क्या आपकी कोई थैली खो गयी है?''

चौंक कर वे दोनों खड़े हो गये और उस बालक की ओर देखने लगे।

''तुझे कैसे पता चला रे?'' उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा।

बालक ने कहाह्वह्व''अगर आपकी थैली खोई है, तो मेरे साथ चलें।''

वे बोलेह्वह्व''हम अपनी थैली ही ढूँढ़ रहे हैं। चलो।''

वे दोनों उस बालक के साथ चल दिये। गलियारे में एक जगह उसने दोनों को खड़ा कर दिया और बोलाह्वह्व''मैं अभी आता हूँ।''

थोड़ी ही देर में वह थैली ले कर आ पहुँचा।

''टार्च जलाइए। देखिए, यह आपकी ही थैली है न?''

उन्होंने टार्च जलायी।

''हाँ, हाँ, यह हमारी थैली है,'' वे दोनों एक-साथ बोले।

बालक ने उन्हें थैली पकड़ा दी। एक ने आगे बढ़ कर बालक को चिपटा लिया। दूसरे व्यक्ति ने जल्दी से

कुछ नोट थैली से निकाले और बालक की हथेली पर रख दिये।

बालक ने हथेली उलट दी और बोलाह्न ''मैं क्या करूँगा इन्हें ले कर?''

फुरती से वह भागा और गलियारे के अँधेरे में गायब हो गया।

कैसा था वह बालक!

बच्चो, तुम अपने से ये सवाल पूछनाह्न ''मैं उस बालक की जगह होता, तो क्या करता? क्या मैं उस बालक-जैसा हूँ? यदि मैं उस-जैसा नहीं हूँ, तो क्या यह ठीक है?'' सवाल पूछ कर अपने को जवाब भी देना। अपने गुरुजनों से पूछना कि तुम्हारे जवाब सही हैं कि नहीं।

□ □ □

महत्त्वपूर्ण सूचना

कृपया सभी धन-राशि पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक के द्वारा "The Divine Life Society," Shivanandanagar, Uttarakhand के नाम से भेजें। बैंक ड्राफ्ट अथवा बैंकर चेक का देय "Rishikesh" के अन्तर्गत निम्नलिखित बैंक में होना चाहिए:

"State Bank of India, Punjab National Bank, Punjab and Sind Bank, Union Bank of India, State Bank of Patiala, Oriental Bank of Commerce, Canara Bank, Indian Overseas Bank, Bank of India, Bank of Baroda."

* राशि भेजने का हेतु अवश्य लिखें। साथ ही पूरा पता और टेलीफोन नम्बर भी लिखें।

* यदि आपकी राशि रु. २००/- से अधिक हो, तो आप निजी चेक (Personal Cheque) भेज सकते हैं।

* **कृपया राशि मनी आर्डर (Money Order) द्वारा भेजने की उपेक्षा करें।** मनी आर्डर इलैक्ट्रानिक माध्यम से भेजे जाते हैं और उनमें प्रेषक का धन भेजने का उद्देश्य या कोई अन्य सन्देश नहीं आता। अतः यदि मनी आर्डर द्वारा धन भेजें तो कृपया एक अलग पत्र द्वारा मनी आर्डर नम्बर और धन-राशि भेजने का उद्देश्य लिख कर भेजें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय अपनी विनम्र सेवा, लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के द्वारा निरन्तर दे रहा है। बीमार तथा निराश्रित लोगों के लिए मेडिकल सहायता से युक्त यह एक 'घर' है।

यद्यपि इस बार अभी तक वर्षा खुल कर नहीं हुई है, तो भी बहुत से ऐसे रोगी अभी तक भरती किये जा चुके हैं जो वर्षा से पूरी तरह भीगे हुए, सिर से पाँव तक गीले, हड्डियों तक जिनके कँपकँपी लगी हुई थी; केदारनाथ और नीलकण्ठ के यात्री और प्रारब्धवश अनजान दिशा में भटकने वाले साधु जिन्हें अचानक रोग द्वारा घेर लिये जाने पर रुकना पड़ा था। इस माह कम-से-कम चार रोगी तो फुप्फुसीय तपेदिक रोग से ग्रसित भरती किये गये, जिनमें से दो 'एच. वी. पोज़िटिव' थे। सभी की तुरन्त तपेदिक विरोधी चिकित्सा आरम्भ कर दी गयी, धीरे-धीरे उनकी स्थिति में सुधार हो रहा है।

ऐसे कुष्ठरोगी भरती किये गये जिनके पैरों में असाध्य घाव थे, ऐसे घावों को दीर्घकालीन चिकित्सा की आवश्यकता रहती है और कुष्ठ रोगियों में ऐसे घाव पाये जाना सामान्य रोग है। सामान्य व्यक्ति की चोट का घाव तो ठीक होने में अधिक समय नहीं लेता; किन्तु कुष्ठरोग ग्रसित व्यक्ति की त्वचा अत्यन्त शुष्क होने के कारण साधारण-सी चोट भी बढ़ कर बहुत शीघ्र भयंकर रूप ले लेती है। एड़ी थोड़ी-सी भी फट जाये तो शीघ्र ही संक्रामक घाव बन जाता है और क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति की अपेक्षा कुष्ठ रोगी में दर्द की अनुभूति बहुत ही देर से और धीमी होती है, अतः घाव बनने के बाद ही पता चलता है। दर्द न होने के कारण लापरवाही भी हो जाती है। इसलिए कुष्ठ रोग से ग्रसित हो जाने पर हाथ-पैरों की दैनिक जाँच अति-आवश्यक है जिससे कि हल्की-सी चोट को देखते ही आरम्भ में ही संक्रमण हो जाने से बचा लिया जाये।

तपेदिक और कुष्ठ रोग के अतिरिक्त अन्य अलग-अलग रोगों से पीड़ित व्यक्ति भी भरती किये गये। इनमें साधारण उदर रोगों से ग्रस्त रोगियों से ले कर शरीर के विभिन्न भागों में होने वाले कैंसर के रोग से ग्रसित व्यक्ति भी हैं और दोनों टाँगों में लकवे का युवक-रोगी भी है। गुरु-कृपा ही उन्हें यहाँ लायी है, गुरु-कृपा ही उनकी रक्षक है, गुरु-कृपा के ही आलिंगन में वे हैं, और उनके लिए तथा हम सबके लिए भी सदैव गुरु-कृपा-वृष्टि की ही प्रार्थना है।

''भगवान् से बढ़ कर संसार में और कोई रक्षक नहीं है। जब सब साथ छोड़ जाते हैं, भगवान् तब भी कभी पीछे नहीं हटते। जब कभी असफलता या निराशा का सामना करना पड़े, भगवान् का एक ही सुरक्षापूर्ण चिन्तन उनकी अपार-अनन्त करुणा और कृपा का विचार ही आपके लिए शान्ति, सुख और प्रसन्नता लाने के लिए पर्याप्त है। इससे आपका जीवन धन्य हो जायेगा। भगवान् का आसरा सर्व-समर्थ है। कष्ट की कैसी भी घड़ी हो, एकमात्र उनका आश्रय पूर्ण सुरक्षा-कवच है। यह वैयक्तिक और समष्टि सभी की दृष्टि से सत्य है।'' (पापा रामदास)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

चेन्नै में गुरुदेव की प्रतिमा

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जन्म-शताब्दी कार्यक्रमों के एक अंग के रूप में १९८७ में चेन्नै में 'मद्रास विश्वविद्यालय परिसर' के निकट मरीना में गुरुदेव की एक प्रतिमा लगायी गयी थी। यह प्रतिमा २००५ में किन्हीं अज्ञात कारणों से उस स्थान से हटा दी गयी थी। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश और श्री एलुमलाई जी, श्री स्वामी सुन्दरानन्द जी और श्री ए. वेंकटेशन जी (ट्रिपलीकेन शाखा) ने सम्मिलित रूप से इस विषय को विश्वविद्यालय के उच्चाधिकारी के समक्ष पुनः उठाया। कुलपति प्रोफेसर एस. रामचन्द्रन, प्रोफेसर एम. रंगनाथम, कुलसचिव, प्रोफेसर वी. के. पद्मनाभन, परिसर-निदेशक के सहानुभूतिपूर्ण सहयोग तथा मद्रास विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, लोक-कार्य विभाग इत्यादि की सहायता से गुरुदेव की साढ़े सात फुट ऊँची नव-निर्मित प्रतिमा की उसी स्थान पर ७ मार्च २००९ को पुनः स्थापना कर दी गयी है।

दिव्य जीवन संघ प्रोफेसर एस. रामचन्द्रन, प्रोफेसर एम. रंगनाथम, प्रोफेसर वी. के. पद्मनाभन तथा गुरुदेव के उन सभी भक्तों के प्रति अत्यन्त अनुग्रहीत है जिन्होंने प्रतिमा की स्थापना में अथक सहयोग दिया। गुरुदेव की महती कृपा-दृष्टि सभी पर हो!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आश्रम मुख्यालय में कृष्ण यजुर्वेद पारायण

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रथम पुण्यतिथि आराधना के कार्यक्रमों के एक अंग के रूप में आश्रम ने कोयम्बतूर से एक वेद-मर्मज्ञ श्री सी. श्रीनिवासन जी को आमन्त्रित किया था, जिन्होंने अत्यन्त हर्षपूर्वक हमारे निमन्त्रण को स्वीकार कर के २५ से २८ जुलाई २००९ तक चार दिवसीय यजुर्वेद का पाठ श्री विश्वनाथ मन्दिर परिसर में किया।

वेद चार हैं। धर्म सम्बन्धी ज्ञान के यही सर्वोच्च प्रमाण हैं। धर्म सम्बन्धी सत्य का बोध अन्य किसी भी प्रकार से नहीं हो सकता। विश्व-भर के धर्मग्रन्थों और शास्त्रों में ये प्राचीनतम हैं। उपनिषद् वेदों का सार हैं।

श्री सी. श्रीनिवासन जी जैसे विद्वान् आजकल दुर्लभ हैं। उन्होंने विश्व-शान्ति तथा सर्वजन हिताय समृद्धि के लिए तथा भगवान् विश्वनाथ की पूजा के रूप में सम्पूर्ण कृष्ण यजुर्वेद संहिता का पारायण किया। इसके साथ ही रात्रि सत्संग के समय समाधि मन्दिर में यजुर्वेद संहिता, आरण्यक और उपनिषदों में से चयनित मन्त्रोच्चारण भी किया। इस मन्त्रोच्चारण में पद, क्रम, जटा और गण सम्मिलित थे। मन्त्रोच्चारण से समाधि मन्दिर का सम्पूर्ण वातावरण तरंगित हो उठा, जिसे सभी उपस्थित श्रोताओं ने अनुभव किया। पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने रात्रि सत्संग का संचालन किया तथा मन्त्रों के उद्भव, उनके अर्थ, सार और उद्देश्य बताते हुए समुचित व्याख्या भी की।

पूर्णाहुति के दिन श्री सी. श्रीनिवासन जी को सम्मानित किया गया।

श्री कृष्ण जयन्ती महोत्सव

इस वर्ष १३ अगस्त २००९ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव बहुत ही अधिक उत्साहपूर्वक एवं भव्य रूप में मनाया गया। इसका कारण यह रहा कि परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधना महोत्सव के लिए १४ से १८ अगस्त तक होने वाले कार्यक्रम से यह एक ही दिन पूर्व था।

२३ जुलाई से ५ अगस्त २००९ तक श्रीमद्भागवतम् का पारायण इसी के एक अंग के रूप में किया गया। श्री कृष्ण जन्माष्टमी को प्रातः ब्राह्ममुहूर्त के ध्यान-प्रार्थना सत्र के तुरन्त बाद प्रभातफेरी की गयी। यज्ञशाला में मानव-कल्याण और विश्व-शान्ति हेतु हवन भी किया गया। श्री विश्वनाथ मन्दिर के गर्भगृह में विराजमान मुरलीमनोहर के अति-सुन्दर सुसज्जित विग्रह के सम्मुख मन्दिर परिसर में प्रातः ७ बजे से सायं ७ बजे तक द्वादशाक्षरी मन्त्र का सामूहिक संकीर्तन किया गया। भगवान् श्री कृष्ण की पारम्परिक विधिवत् पूजा और पुरुषसूक्तम्, नारायणसूक्तम् और विष्णुसूक्तम् मन्त्र गायन सहित अभिषेक सायं ५ बजे से ही प्रारम्भ कर दिया गया। भारत के सुदूर विभिन्न भागों से तथा विश्व-भर के अनेक देशों से २००० के लगभग भक्तों ने व्यक्तिगत रूप से अभिषेक में भाग लिया। उधर इसके साथ ही दत्तात्रेय हिल (शैलखण्ड) पर विशेष रूप से निर्मित विशाल पण्डाल में होने वाले सुमधुर आत्मोत्थायक भजन-कीर्तन की स्वर-लहरियों ने समस्त आश्रम को दिव्य वातावरण से तरंगित किया हुआ था। भगवान् श्री कृष्ण की सुन्दर सुगन्धित पुष्पों से सहस्र-नामावली सहित अर्चना की गयी।

११-४५ पर परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने श्रीमद्भागवतम् के दशम स्कन्ध में वर्णित भगवान् श्री कृष्ण के प्राकट्य का प्रसंग पढ़ा। उसके उपरान्त भव्य आरती हुई। कार्यक्रम का समापन शिवानन्द सत्संग भवन में पावन प्रसाद-वितरण के साथ हुआ।

आश्रम मुख्यालय में वार्षिक 'साधना-सप्ताह'

आध्यात्मिक जिज्ञासुओं, साधकों और भक्तों को प्रेरणा और निर्देशन हेतु आश्रम मुख्यालय में ८ से १४ जुलाई २००९ तक ४६ वाँ साधना-सप्ताह आयोजित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम 'शिवानन्द सत्संग भवन' में हुआ। इन सभी सातों दिनों में कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकालीन प्रार्थना और ध्यान सत्र से हुआ, जिसका संचालन श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी ने किया। इसके तुरन्त बाद प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने योगासन कक्षाओं का संचालन किया। आश्रम के वरिष्ठ स्वामी जी तथा विभिन्न आध्यात्मिक संस्थाओं के आध्यात्मिक सुविज्ञ महा जनों ने अपनी दिव्य उपस्थिति द्वारा तथा प्रेरणाप्रद और ज्ञानप्रद प्रवचनों द्वारा साधकों को आशीर्वादित किया।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज (कैलास आश्रम) ने अपने उद्घाटन आशीर्वचनों में कहा कि मनुष्य-जन्म भगवान् के द्वारा मानव को प्रदान किया गया सर्वोत्कृष्ट वरदान है तथा जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा दिलाने वाला एकमात्र मोक्ष का साधन है। किन्तु मोक्ष की प्राप्ति केवल इच्छा कर लेने मात्र से नहीं हो सकती; इसकी प्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञता, गहन वैराग्य और सच्ची साधना की आवश्यकता है।

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने आध्यात्मिक पथ पर गुरु की आवश्यकता पर गहन बल दिया और कहा कि साधक को ब्रह्मज्ञान प्रदान करने वाले गुरु साक्षात् भगवान् ही होते हैं।

परम पूज्य श्री दण्डी स्वामी हंसानन्द जी महाराज (स्वर्गाश्रम) ने अपने प्रबोधक सन्देश में कहा कि भगवान् इस जगत् के विवर्तोपादान कारण हैं। इस महान् सत्य की व्याख्या करते हुए उन्होंने रज्जु पर सर्प के अध्यास का उदाहरण दिया। सर्प का तो अस्तित्व नहीं है, किन्तु रज्जु की भ्रान्ति सर्प के अस्तित्व का कारण बनी हुई है। इसी प्रकार जगत् का अस्तित्व नहीं है, किन्तु भगवान् अथवा ब्रह्म का अज्ञान जगत् की सत्ता का कारण बना हुआ है। जगत् मिथ्या है, केवल ब्रह्म ही सत्य है। वेदों की उद्घोषणा है कि हम सत्-चित्-आनन्द (सच्चिदानन्द) ब्रह्म से भिन्न नहीं हैं। यदि हम देहाध्यास, अर्थात् 'मैं यह शरीर हूँ' के अज्ञान जनित भ्रम से छुटकारा पा लें, केवल तभी हम अपने निज सच्चिदानन्द स्वरूप को अनुभव कर सकते हैं।

परमार्थनिकेतन, ऋषिकेश के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज ने जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के प्रातःस्मरणं स्तोत्र के महत्त्व की विस्तृत व्याख्या की। स्वामी जी ने कहा कि हमारे वास्तविक स्वरूप का इस स्तोत्र में अत्यन्त सुन्दरता से वर्णन किया गया है। हम सच्चिदानन्द ब्रह्म हैं। हम जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति, तीनों अवस्थाओं के साक्षी द्रष्टा हैं। हमारा वास्तविक स्वरूप मन की पकड़ से अतीत अर्थात् परे है। केवल ब्रह्म ही सत्य है। जगत् को भले ही हम चर्म-चक्षुओं से देख पाने के कारण सत्य समझते हैं, किन्तु यह उतना ही मिथ्या है जितना कि सपने का संसार। स्वामी जी ने कहा कि यदि साधक इसी जन्म में आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस एक अत्यन्त व्यावहारिक साधना को अपनाएँब्रह्मज्यों-ही वह प्रातः सो कर उठें, तो यह निश्चय कर लें कि आज के दिन वह इस संसार को स्वप्नवत् मानते हुए पूरा दिन व्यतीत करेंगे। इस साधना का सतत अभ्यास करते रहने से उन्हें शीघ्र ही आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो सकता है।

गीता विज्ञान पीठ, कनखल, हरिद्वार के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती जी ने अपने आशीर्वचन में, आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होने और उन्नति करने में गुरु-कृपा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। हमें जागृत करने और निर्देशित करने के लिए परमात्मा ही स्वयं गुरु का शरीर धर कर अवतरित हुआ करते हैं। गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण करके हम परमात्म-साक्षात्कार कर सकते हैं। स्वामी जी ने साधना के तीनों मार्गब्रह्मकर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग पर भी साधकों के लिए यथेष्ट प्रकाश डाला।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी भगवत्स्वरूप जी महाराज (दर्शनाचार्य, गुरु मण्डल आश्रम, मायापुरी, हरिद्वार) ने मोक्ष-प्राप्ति के लिए विषय-सुखों के त्याग की आवश्यकता पर बल दिया, ''**यदि मोक्षं इच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत् त्यज।**'' यदि मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा है, तो विषय-सुखों को विष के समान समझ कर त्याग दें। स्वामी जी ने यह भी कहा कि जिस प्रकार अपना चेहरा देखने के लिए स्वच्छ दर्पण की आवश्यकता होती है, ठीक इसी प्रकार अपने निज स्वरूप को देखने के लिए शुद्ध, पवित्र मन की आवश्यकता है।

महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विश्वात्मानन्द पुरी जी महाराज (साधना सदन, हरिद्वार) ने अपने प्रवचन में कहा कि चौरासी लाख विभिन्न योनियों में भटकने के उपरान्त प्रभु की अपार कृपा होने पर इस मनुष्य-शरीर की प्राप्ति होती है। यदि इस मनुष्य-शरीर को प्राप्त करके, इसे प्राप्त करने के परम उद्देश्य अर्थात् ईश्वर-साक्षात्कार को प्राप्त नहीं करते हैं, तो इससे बढ़ कर और कोई हानि, कोई विनाश नहीं हैह्नह्न''**महती विनष्टिः।**'' उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि हमारा वास्तविक स्वरूप सच्चिदानन्द है; किन्तु भ्रमवश हम स्वयं को बन्धन में अनुभव करते हैं। इस अज्ञान जनित भ्रान्ति को नष्ट करने के लिए साधक को चाहिए कि श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के निकट ब्रह्मजिज्ञासापूर्वक जाए तथा '**तत्त्वमसि**' जैसे महावाक्यों का श्रवण करते हुए उनके निहितार्थों पर मनन करे।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने अपने उद्घाटन-भाषण में परमात्मा और गुरुदेव की समस्त साधकों और भक्तों पर कृपा-वृष्टि के लिए प्रार्थना की। स्वामी जी महाराज ने सन्त कबीर के जीवन-चरित का उदाहरण देते हुए भगवन्नाम-स्मरण की महिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस कलिकाल में नाम-जप ही एकमात्र प्रभु-प्राप्ति की रामबाण औषधि है। मानव-जीवन की क्षणभंगुरता बताते हुए, स्वामी जी ने बल दे कर कहा कि साधकों को इस अमूल्य जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए, बल्कि जीवन की हर साँस के साथ प्रभु-नाम-स्मरण करते रहना चाहिए।

साधकों को प्रेरणा देते हुए स्वामी जी ने भाई लारेंस की कहानी सुना कर कहा कि इसी प्रकार हमें भी अपने दैनिक जीवन में भगवान् की विद्यमानता को हर क्षण अनुभव करते रहना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में सफलता-प्राप्ति का यह सुशीघ्र सुनिश्चित उपाय है। स्वामी जी ने गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से सम्बन्धित कुछेक प्रेरणाप्रद घटनाएँ भी सुनायीं तथा अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अपने समस्त ज्ञान को उन्हीं से प्राप्त होने का श्रेय दिया।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) ने साधना-सप्ताह के सभी सातों दिन प्रातःकालीन ध्यानोपरान्त के प्रवचनों की शृंखला में तथा दिवस में होने वाले सत्रों में दिये जाने वाले प्रवचनों में साधना के विविध पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में आत्म-कृपा अर्थात् स्व-प्रयास पर विशेष बल देते हुए कहा कि इसके अभाव में साधक सच्चाई और गम्भीरता से अपनी साधना में प्रवृत्त नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि अभी तो हम देहाध्यास में भ्रमित होने के कारण देह-केन्द्रित जीवन ही जी रहे हैं। हमें अपने वास्तविक स्वरूप अपनी दिव्यता तक ऊँचा उठना होगा, जिसके लिए कठोर गहन साधना करनी होगी। सन्त जन और गुरु हमें पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं; किन्तु पथ पर चलना तो हमें ही होगा, अन्य कोई हमें उठा कर चला नहीं सकता। भगवान् श्री कृष्ण ने भी श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है, ''**उद्धरेदात्मनात्मानम्।**''

स्वामी जी ने 'सेवा, भक्ति, ध्यान और साक्षात्कार, गुरुदेव के समन्वययोग में आने वाले इन चार शब्दों के महत्त्व को भी बताया। समन्वययोग की साधना द्वारा व्यक्ति परम लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में आने वाली मल, विक्षेप और आवरण की बाधाओं को दूर कर सकता है।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद प्रवचन में भगवान् श्री कृष्ण द्वारा बताये गये संकेत-शब्दह्वह्व'अभ्यास' पर बल दिया। अभ्यास ही है, जिसको करते रहने से परिपूर्णता तक पहुँचा जा सकता है। जान लेने के बाद यदि हम उसका अभ्यास नहीं करते, साधना नहीं करते, तो कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। स्वामी जी महाराज ने साधकों को श्रीमद्भगवद्गीता का नित्य स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि इसमें सब शास्त्रों का सार निहित है तथा यह साधक जिज्ञासुओं को माँ के समान निर्देशन देती है। स्वामी जी ने यह भी कहा कि भगवान् का 'अनन्य चिन्तन' करना परमानन्द-प्राप्ति का मूल रहस्य है तथा 'अन्य चिन्तन' (सांसारिक चिन्तन) समस्त दुःखों का कारण है।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने प्रबोधन में कहा कि सामान्यतया साधकों की यह शिकायत रहती है कि इतने दीर्घ काल से साधना करते रहने पर भी उन्हें साधना में कोई ठोस आध्यात्मिक उन्नति होती प्रतीत नहीं होती और इसका कारण भी उन्हें ज्ञात नहीं हो रहा होता। स्वामी जी महाराज ने इसे समझाने के लिए एक अत्यन्त उपयुक्त उदाहरण देते हुए कहा कि यह बिलकुल उसी प्रकार है जैसे एक मधुमेह का रोगी, रोग के उपचार हेतु दवाई और इन्सुलिन का टीका नित्य लेता रहे और साथ ही मिठाइयाँ खाने से भी स्वयं को रोक न सके। इसी तरह साधक भी आध्यात्मिक साधनाएँ तो अत्यन्त उत्साहपूर्वक और गम्भीरता से करते रहते हैं; किन्तु सांसारिक विषय-सुखों के प्रलोभन को रोक न पाने के कारण अपने दोषों और अनुचित कार्यों को भी नहीं छोड़ते। स्वामी जी ने श्रीमद्भगवद्गीता के १५ वें अध्याय के श्लोक **'यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः'** का उल्लेख किया कि जिन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि को त्याग कर अपने अन्तःकरण को शुद्ध नहीं किया है, ऐसे अज्ञानी जन तो यत्न करते रहने पर भी परमात्मा को जान नहीं सकते।

श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद आशीर्वचन में कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद में वर्णित दो मार्गों का वर्णन करते हुए कहा कि प्रत्येक साधक के समक्ष दो मार्ग हैं। प्रथमह्वह्वप्रेयोमार्ग है जो सुखप्रद है, हमारी इन्द्रियों को सन्तुष्ट करने वाला है; किन्तु यह मनुष्य को बन्धन में जकड़ने वाला है। दूसराह्वह्वश्रेयोमार्ग है, देखने-अपनाने में कठिन और दुर्बोध प्रतीत होता है, सुखकर भी नहीं लगता; किन्तु यही व्यक्ति की सर्वोच्च भलाई और सर्वश्रेष्ठ कल्याण का मार्ग है। स्वामी जी ने कहा कि साधक को नचिकेता की भाँति ज्ञान का मार्गह्वह्वश्रेयोमार्ग अपनाना चाहिए।

श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में मनुष्य-जीवन के परम लक्ष्य अर्थात् परमात्म-साक्षात्कार की प्राप्ति पर बल दिया। स्वामी जी ने कहा कि हम वास्तव में सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, किन्तु स्वयं को यह नाशवान् शरीर ही मानते रहते हैं। यह देहाध्यास ही हमारे बन्धन का कारण है, हमारे दुःख-कष्टों का कारण है। इस देहात्म-बोध से छुटकारा पाने और ब्रह्म-चेतना प्राप्त करने का एकमात्र उपाय, सरलतम साधना है प्रभु-नाम-स्मरण, सतत नाम-जप करते रहना।

श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने साधकों की सामान्य कठिनाई पर प्रवचन दिया। प्रायः साधक दीर्घकालीन साधना करने पर इसी कठिनाई का सामना करते हुए पाये जाते हैं, कि वह कहीं अटके हुए हैं जहाँ से निकल नहीं पा रहे हैं। स्वामी जी ने वर्णन किया कि वह साधक इस सत्य पर दृढ़ विश्वास नहीं रखते कि केवल एक ब्रह्म ही सत्य है और हमारा वास्तविक निज स्वरूप वही है, उसके सिवा अन्य कुछ नहीं है। इसीलिए वह साधना को एक अति-कठिन और दुष्कर कार्य समझ कर, कि कुछ नया प्राप्त करना है, संघर्ष करते रहते हैं; जब कि वास्तव में नया कुछ भी न पा कर हमें अपने वास्तविक निज स्वरूप को ही यथार्थ में अपने में से अभिव्यक्त करना है।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज का प्रवचन भक्ति-मार्ग पर केन्द्रित था। स्वामी जी ने कहा कि भक्ति का

अर्थ अन्य सब-कुछ से बढ़ कर भगवान् से प्रेम करना है। भक्ति-मार्ग पर चलने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि संसार और उसके विषय-पदार्थों के प्रति गहन वैराग्य हो तथा प्रभु-प्राप्ति की लगन अति-तीव्र हो। एक सच्चा भक्त भगवान् के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं चाहता। भक्ति-रस वास्तव में ऐसा अमृत है जिसे पी कर भक्त अमरत्व प्राप्त कर लेता है।

श्री स्वामी राधाकृष्णानन्द जी महाराज ने सन्त-महिमा पर प्रवचन दिया। स्वयं भगवान् ही मानव-देह धारण करके सन्त रूप में आते हैं। वह अज्ञान-निद्रा से ग्रस्त जीवात्माओं को उनके अनश्वर परिपूर्ण आनन्द स्वरूप के प्रति जाग्रत करते हैं। वह प्रत्येक प्राणी पर अपनी कृपा और प्रेम-वृष्टि करते रहते हैं। अपने कृपा-कटाक्ष मात्र से ही वह दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति को पूर्ण शुद्ध व्यक्ति बना सकते हैं।

श्री स्वामी युगलप्रियानन्द माता जी ने अपने प्रवचन में परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को सर्वोच्च श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उनकी महान् शिक्षाओं के विषय में बताया। उन्होंने पूज्य स्वामी जी महाराज के उदात्त जीवन-चरित में से कतिपय प्रेरणाप्रद प्रसंग साधकों को बताये, जो उनको निर्देशन देने तथा प्रेरित करने वाले थे। उनके शब्दों को उद्धृत करते हुए साधकों से कहा कि प्रतिदिन प्रातःकाल उठते ही साधकों को चाहिए कि वह प्रभु-स्मरण के द्वारा स्वयं अपने हृदयों को शुद्ध, पवित्र कर लें।

श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज ने उपनिषदों के महान् सत्यों को दोहराते हुए कहा कि केवल ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और हम ब्रह्म से भिन्न नहीं हैं। वास्तव में हम देश-कालातीत दिव्यता ही हैं। इसलिए हमारा प्रत्येक कार्य और हमारी प्रत्येक गतिविधि दिव्यता को ही अभिव्यक्त करने वाली होनी चाहिए।

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन में परम पावन गुरुदेव के बीस आध्यात्मिक नियमों में से प्रथम नियम पर विशेष बल देते हुए कहा कि यदि साधक प्रातः चार बजे नियमित रूप से उठ जाने का अभ्यास दृढ़तापूर्वक करे, तो वह शान्तिपूर्ण और आनन्ददायक जीवन जी सकता है, क्योंकि इस प्रकार उसके पास अपनी साधना करने तथा आसन और प्राणायाम करने के लिए पर्याप्त समय होगा।

श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने परमाराध्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन और शिक्षाओं के सम्बन्ध में बताया। स्वामी जी ने साधकों से कहा कि उन्हें आरम्भ में गुरुदेव के समन्वययोग अर्थात् 'सब-कुछ थोड़ी-थोड़ी मात्रा' में करना चाहिए। कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग और राजयोगह्नचारों का संयुक्त अभ्यास करने से उनका आध्यात्मिक जीवन रुचिकर, उत्साहपूर्ण और ऊर्जास्पद बन जायेगा। धीरे-धीरे जब वह अपनी साधना में उन्नत होने लगें, तो अपनी रुचि के अनुसार किसी भी एक योग-मार्ग पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

प्रोफेसर राजेन्द्र भारद्वाज जी ने अपने प्रवचन में बोधगम्य रूप से बताया कि हमें अपने नित्य-प्रति के जीवन में कुल चार तत्त्वों से सामना करना होता है। इन तत्त्वों से हम किस प्रकार का सम्बन्ध रखते हुए अपने जीवन में व्यवहार करते हैं, इसी पर हमारे आध्यात्मिक जीवन की उन्नति और उसका विकास निर्भर करता है। ये चार तत्त्व हैंह्नह्नसांसारिक विषय-पदार्थ, समस्त प्राणी-वर्ग, मनुष्य की अपनी मानसिकता और परमात्मा। प्रथम से विवेकपूर्वक, द्वितीय से करुणापूर्वक निःस्वार्थ सेवा से, तृतीय से आत्म-नियन्त्रण से तथा चतुर्थ से गहन भक्ति-भाव से समर्पित हो कर व्यवहार करने से साधक जीवन का परम लक्ष्य सहज ही प्राप्त कर सकते हैं।

प्रोफेसर वासुदेव रणदेव जी ने अपना प्रवचन परमश्रद्धास्पद श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन-दर्शन पर केन्द्रित करते हुए तीन शब्दों में उसका सारांश बतायाह्नह्नमानवीयता, विनम्रता और दिव्यता। उन्होंने यह भी बताया कि मानव मात्र की सामान्य समस्या यह है कि वह स्वयं

को शरीर ही समझता रहता है। सभी साधनाओं का मुख्य उद्देश्य इस देहाध्यास से ऊपर उठ कर अपनी दिव्यता को पहचानना है।

श्री हरिहर सिंह जी ने कहा कि अपने दुर्गणों को त्यागना और सद्गुणों को अर्जित करना ही साधना का सार है। काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार मानसिक रोग हैं तथा यही बन्धन और दुःखों का मुख्य कारण हैं। साधक को सत्य, पवित्रता, अहिंसा, विनम्रता, दया और सन्तोष जैसे सद्गुण अपनाने के लिए कठोर साधना भी करनी पड़े तो करनी चाहिए, इसी से दिव्यता अभिव्यक्त होगी।

श्री ब्रजेश पाठक जी ने कहा कि आध्यात्मिक पथ पर उन्नति करने के लिए इन्द्रियों को नियन्त्रित करना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने साधकों को भगवान् के प्रति अनन्य भक्ति विकसित करने तथा प्रभु-चरणों में हनुमान् जी और लक्ष्मण जी की भाँति पूर्ण समर्पण-भाव रखने के लिए प्रेरित किया।

प्रवचनों तथा अन्य प्रवक्ताओं के सन्देशों के अतिरिक्त परम वन्दनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज तथा सुसम्माननीय श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के ध्वन्यांकित वीडियो भी दिखाये गये। साथ ही प्रश्नोत्तर-सत्र भी हुए, जिनमें साधकों के प्रश्नों के उत्तर परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज द्वारा दिये गये।

रात्रि-सत्संगों में सभी सात दिनों में वृन्दावन के श्रीराम शर्मा और साथियों द्वारा श्रीकृष्ण लीला प्रस्तुत की गयी। अन्तिम समापन-सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज और परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा विदाई-उपदेश तथा आशीर्वाद दिये गये। ज्ञान-प्रसाद-वितरण से साधना-सप्ताह सम्पूर्ण हुआ।

* * *

सूचना

तृतीय राज्य-स्तरीय सम्मेलन, छत्तीसगढ़ तथा दिव्य जीवन संघ, नन्दिनीनगर शाखा का रजत-जयन्ती महोत्सव १२ से १४ दिसम्बर २००९

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से छत्तीसगढ़ की दिव्य जीवन संघ की शाखाएँ तृतीय राज्य-स्तरीय सम्मेलन तथा नन्दिनीनगर शाखा की रजत-जयन्ती का महोत्सव १२ से १४ दिसम्बर २००९ तक मना रही हैं। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय से वरिष्ठ स्वामी जी साधकों को निर्देशन देने के लिए और सम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारेंगे। सभी साधक-भक्त इस सम्मेलन और उत्सव में भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

पंजीकरण तथा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेंह्रह्र

१. श्री के. एस. ठाकुर, प्रधान
दिव्य जीवन संघ शाखा, नन्दिनीनगरह्रह्र४९००३६
जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ — फोन : ०९३००५४४९०७

२. श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी — फोन : ०९४०६०९३७४४

३. श्री स्वामी शिवदासानन्द जी — फोन : ०९४२४२८४३४९

४. श्री पंकज चौबे — फोन : ०७७१२४२५०९५

५. श्री के. एल. बरेथ — फोन : ०९४२५५६७९४१

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधना का महोत्सव

परम श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधना का महोत्सव आश्रम मुख्यालय में १४ से १८ अगस्त २००९ तक, इस परम पावन अवसर के अनुसार ही, अत्यन्त भव्य रूप से विधिवत् पावनता से मनाया गया। दत्तात्रेय पहाड़ी पर एक विशिष्ट विशाल पण्डाल बनाया गया था, जिसे अत्युत्तम ढंग से भाँति-भाँति के पुष्पों से सुसज्जित किया गया था और सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम वन्दनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के विशाल चित्र रखे गये थे।

१४ अगस्त २००९ के पूर्वाह्न को आश्रम मुख्यालय में दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने कार्यक्रम का शुभारम्भ 'जय गणेश' प्रार्थना से किया। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने देश-विदेश से इस पावन आराधना पर्व में सम्मिलित होने के लिए पधारे हुए लगभग ४००० लोगों का हार्दिक स्वागत किया। ब्रह्मचारी श्री आत्मनिष्ठ चैतन्य जी द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चारण से पारम्परिक रीति से स्वागत के उपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने चार दिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन का दीप-प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन किया। इस सम्मेलन का विषय था ''परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का जीवन, शिक्षाएँ और लक्ष्य।''

सम्मेलन के चारों दिन कार्यक्रम का प्रारम्भ ब्राह्ममुहूर्त की प्रार्थना-ध्यान से किया गया तथा उसके उपरान्त पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के प्रातःकालीन प्रवचनों के अंशों का वीडियो द्वारा प्रदर्शन किया गया। इसके तत्काल बाद प्रभातफेरी होती थी। पूर्वाह्न तथा अपराह्न सत्र सम्मेलन के लिए निर्धारित किये गये थे, जिसमें प्रति दिन दो सत्र तथा कुल आठ सत्र हुए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने की तथा इसमें परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज और स्वयं परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने आशीर्वचन दिये। एक 'सचित्र-पुस्तक' तथा स्मारक ग्रन्थ के अतिरिक्त कई छोटी पुस्तिकाओं का विमोचन भी इस महान् पर्व के शुभारम्भ के उपलक्ष्य में किया गया।

द्वितीय और तृतीय सत्र परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। चौथे, पाँचवें, छटे और सातवें सत्र की अध्यक्षता क्रमशः परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने की। प्रत्येक सत्र का संचालन अत्यन्त भली-भाँति 'मास्टर ऑफ़ सेरेमनीज़' द्वारा किया गया था। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज उद्घाटन सत्र तथा समापन सत्र के तथा दूसरे से सातवें सत्रों के 'मास्टर ऑफ़ सेरेमनीज़' क्रमशः परम पूज्य श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज, श्रीमती दिव्या सतीश जी, श्रीमती तुई सूचक जी, प्रोफेसर राजेन्द्र भारद्वाज जी, डा. डी. एन. नरेश जी तथा डा. जयन्त बी. दवे जी थे।

इस चतुर्दिवसीय सम्मेलन में १०० के लगभग वक्ताओं ने, परम प्रेमास्पद गुरुमहाराज, श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चरणों में अपने शिष्यत्व के विभिन्न समयों के दौरान होने वाले अविस्मरणीय अनुभवों तथा सुमधुर संस्मरणों को अत्यन्त भावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया। परम पावन गुरुमहाराज की जीवन्त स्मृति में उदात्त महिमामय हृदयोद्गार प्रकट किये गये। समस्त वातावरण परम प्रिय गुरुमहाराज की

सतत शाश्वत विद्यमानता के प्रति दृढ़ विश्वास, अटूट गुरु-भक्ति, गहन भक्ति-भाव, भावपूर्ण श्रद्धा से ओत-प्रोत था।

आठवाँ समापन सत्र, परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सत्र में आशीर्वचन-सन्देश तथा धन्यवाद ज्ञापन और सम्मान प्रदान किये गये। धन्यवाद अभिव्यक्त करते समय परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने उन सभी को गद्‌गद वाणी से हार्दिक धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस पावन उत्सव को सफल बनाने के लिए दिन-रात एक करते हुए अथक सेवाएँ दी थीं।

रात्रि सत्संग में दैनिक प्रार्थनाओं तथा स्तोत्र-पाठ के साथ-साथ परमाराध्य गुरुमहाराज के पावन पर्व के उपलक्ष्य में 'स्वरांजलि' नामक एक अत्यन्त सुन्दर-सुमधुर कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इन सभी स्वरांजलि कार्यक्रमों का संचालन कु. मेधा सचदेव ने किया। सर्वश्रुत सुप्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायक श्री शान्तनु एवं श्रीमती दूर्वा भट्टाचार्य, पण्डित संजीव अभयंकर, स्वामी श्री दिव्यव्रतानन्द जी महाराज (श्री रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, कौंटयी, पश्चिम बंगाल) तथा श्री शरद गुप्ता, हैदराबाद ने क्रमशः १४ से १७ अगस्त २००९ तक अपनी आत्मोत्थापक भक्ति-संगीत की स्वर-लहरियों द्वारा समस्त वातावरण और श्रोताओं के हृदयों में अमृत-रस का संचार करते हुए अपनी सुमधुर स्वरांजलि समर्पित की।

१८ अगस्त २००९ को परम श्रद्धेय श्री स्वामी जी महाराज के परम पावन पुण्य-तिथि आराधना दिवस विशद रूप में मनाया गया। ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र का कार्यक्रम सम्मेलन के दिनों के समान ही था। विश्व-शान्ति तथा मानव-कल्याण हेतु यज्ञशाला में हवन किया गया। पूर्वाह्न सत्र में परम पूज्य सद्‌गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पावन पादुकाओं की भव्य महापूजा की गयी। इसके उपरान्त विभिन्न संस्थाओं के आध्यात्मिक विद्वज्जनों एवं महामण्डलेश्वरों द्वारा श्रद्धांजलियाँ दी गयीं। महानुभाव वक्ताओं में कैलास आश्रम के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज, परमार्थ निकेतन के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज, आनन्दाश्रम के परम पूज्य श्री स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज, रामकृष्ण मिशन, वृन्दावन के श्री स्वामी तद्‌जपानन्द जी महाराज तथा उत्तरकाशी के श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज थे।

सभी ने परम पावन गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी के सर्वोत्कृष्ट समुज्ज्वल आध्यात्मिक व्यक्तित्व की व्याख्या की तथा उनके जीवन्त साकार गुरु-भक्ति, प्राणी मात्र के प्रति गहन प्रेम, करुणा तथा अवर्णनीय विनम्रता इत्यादि दैवी गुणों का वर्णन करते हुए उनका महिमा-गान किया।

ऋषिकेश तथा अन्य निकटवर्ती साधुओं के लिए एक विशेष भण्डारा भी किया गया। सायंकाल में श्री विश्वनाथ-घाट पर माँ गंगा की शत-शत दीपों से भव्य आरती-पूजन किया गया। रात्रि सत्संग में 'श्री मनोन्मनी नाट्य संगीत परिषद्, ओंगोल, ए. पी.' द्वारा कुचिपुड़ि नृत्य तथा गुरु श्रीमती ममता सतपथी और पार्टी, 'दशावतार नाट्यशाला, उड़ीसा' द्वारा ओडिसी नृत्य का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दोनों ही नृत्य अत्यन्त भव्य, सुन्दर और मनोमुग्धकारी थे जिन्होंने दर्शकों को आनन्दविभोर कर दिया। आरती तथा पावन प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

इस पाँच दिवसीय पावन आराधना पर्व में सम्मिलित होते हुए इसका सौभाग्यशाली हिस्सा बनना, सभी को एक अपार हर्षप्रद, प्रेरणाप्रद, उन्नायक दिव्य अनुभूति प्रतीत हो रही थी। सद्‌गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम आराधनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराजह्लह्लइन दो दिव्य आदर्शों के प्रति अपने समस्त जीवन को एक जीवन्त, व्यावहारिक और सक्रिय पूजा के रूप में समर्पित कर दें और इस प्रकार अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर लें, यही प्रार्थना है।

* * *

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

श्री स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन, अमर कालोनी, नई दिल्ली की प्रबन्धक समिति ने तथा दिव्य जीवन संघ, वसन्त विहार शाखा, नई दिल्ली ने रविवार, ९ अगस्त २००९ को आयोजित किये गये दो कार्यक्रमों के लिए दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज को आमन्त्रित किया था।

स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन ने परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधना मनाने के लिए ९ अगस्त २००९ की प्रातः सत्संग भवन में कार्यक्रम आयोजित किया था। श्री रामशरणम् आश्रम, दिल्ली के अध्यक्ष डा. विश्वामित्र जी महाराज, डा. मोहिनी गिरी माता जी (गिल्ड ऑफ़ सर्विसिज़) तथा आश्रम मुख्यालय के श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में प्रवचन दिये। पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने कार्यक्रम के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया तथा परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के विलक्षण सन्त गुणों के सम्बन्ध में बतलाते हुए प्रवचन दिया। इस सत्संग में ५०० से अधिक लोग सम्मिलित हुए।

उसी दिन सायंकाल में दिव्य जीवन संघ, वसन्त विहार शाखा ने 'मुक्त धारा', गोल मार्केट, नई दिल्ली में एक सत्संग आयोजित किया था। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने 'जीवन को उद्देश्यपूर्ण तथा लाभपूर्ण बनाने के लिए 'धर्म के महत्त्व' पर प्रवचन दिया। इस सत्संग में विद्वज्जन तथा सरकारी उच्च पदाधिकारी सम्मिलित हुए थे।

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज को 'सरदार पटेल कॉलेज ऑफ़ कौम्युनिकेशन एण्ड मैनेजमैंट', नई दिल्ली ने 'स्पिरिचुअल हैरिटेज ऑफ़ इण्डिया' विषय पर स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को उद्घाटन भाषण देने के लिए २५ अगस्त को आमन्त्रित किया था। तदनुसार पूज्य श्री स्वामी जी महाराज वहाँ गये और ५०० से अधिक विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के समूह को सम्बोधित किया।

६३ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का उद्घाटन कार्यक्रम

६३ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का शुभारम्भ शनिवार, २२ अगस्त २००९ को दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने योग-वेदान्त फॉरैस्ट एकाडेमी के प्रवचन-हाल में दीप-प्रज्वलन द्वारा किया। भारत के १३ प्रान्तों से कुल ४४ विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए आये। एकाडेमी के कुलसचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने पूज्य श्री स्वामी जी महाराज का, प्राध्यापकों, अतिथियों तथा विद्यार्थियों का स्वागत किया।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने उद्घाटन भाषण दिया तथा दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने आशीर्वचन दिये। सरस्वती-पूजन के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भारतीय विद्याभवन की निबन्ध प्रतियोगिता २००८ के परिणाम

पाठकों की जानकारी के लिए सूचित किया जा रहा है कि भारतीय विद्याभवन द्वारा वर्ष २००८ में आयोजित किये गये 'स्वामी शिवानन्द मेमोरियल ऐस्से कॉम्पिटीशन' (स्वामी शिवानन्द स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता) में निम्न लिखित प्रतिभागी पारितोषिक विजयी घोषित किये गये हैं। विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं :

श्री दिनेश कुमार, सुपुत्र श्री रामनिवाज द्वारा श्री राम अवतार मौर्य, सी-३/३५ आवास नगर देवासह्वह्व४५५ ००१ (मध्य प्रदेश)	प्रथम पुरस्कार विजेता
श्रीमती शुभारा शर्मा, पत्नी डा. अमित शर्मा १५१, इन्दिरापुरम, बी. डी. ए. कोलोनी, सुभाषनगर बरेलीह्वह्व२४३ ००१ (उत्तर प्रदेश)	द्वितीय पुरस्कार विजेता
श्री राकेश कुमार वी. ठाकर, ४३, शान्तिनगर राजमन्दिर मल्टीप्लैक्स के निकट, पालनपुर हाई वे दीसाह्वह्व३८५ ५३५, जिला बनासकांठा (गुजरात)	तृतीय पुरस्कार विजेता

प्रो. एस. ए. उपाध्याय, प्रोजेक्ट आफीसर, भवन ऐस्से कॉम्पिटीशनज़, भारतीय विद्याभवन, कुलपति मुन्शी मार्ग, चौपाटी, मुम्बईह्वह्व४०० ००७ **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

युवा शिविर तथा ३२ वाँ अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से ३२ वाँ अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ सम्मेलन २९ से ३१ दिसम्बर २००९ तक पोलसरा, जिला गंजाम, उड़ीसा में होगा। इसी कार्यक्रम के एक अंग के रूप में २७ से ३१ दिसम्बर २००९ तक युवा-शिविर भी होगा। आश्रम मुख्यालय के वरिष्ठ स्वामी जी इस शिविर तथा सम्मेलन में पधारेंगे। शिविर निःशुल्क है। सम्मेलन में प्रतिनिधियों के लिए शुल्क ३५० रुपये है।

सम्पर्क सूत्रह्वह्व

(१) श्री जय चन्द्र नायक, प्रमुख प्रबन्धक, मो. ०९४३८८४९०४९
(२) श्री बिप्र चरण पात्रो, मो. ०९४३७०७८०४१
(३) श्री लक्ष्मी नारायण प्रूष्टी, मो. ०९८६१७५२८३१
(४) श्री भगवान त्रिपाठी, मो. ०९४०४३२००९१

विद्यार्थियों को युवा शिविर में भाग लेने के लिए तथा भक्तों को सम्मेलन में भाग लेने के लिए सादर निमन्त्रण है।

ह्वह्वद **डिवाइन लाइफ सोसायटी**

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

आगरा (उत्तर प्रदेश) : जुलाई २००९ में शाखा की संकीर्तन और योगासन-वर्ग की दैनिक गतिविधियाँ; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति मंगलवार को हवन तथा आध्यात्मिक प्रवचन की सम्पन्नता होने के उपरान्त, श्री गुरुपूर्णिमा को विशेष कार्यक्रम तथा प्रवचन आयोजित हुए। दिनांक २५ मई से २९ जुलाई की अवधि में सेना सहायक कार्यकर्ता गण के लिए ६५ दिवसीय योगासन-तालीम; शाखा की स्थापना के वार्षिक दिन को हवन और प्रवचन दिनांक ५ जुलाई को तथा सूर्यग्रहण की समयावधि में ध्यान सुआयोजित हुए।

आस्का (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ—प्रति रविवार को शाखा के आश्रम में ढाई घण्टों का साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति गुरुवार को भक्तों के निवासस्थानों पर चल-सत्संग। विशेष गतिविधियाँ—श्री गुरुपूर्णिमा तथा पूज्य गुरुदेव के आराधना-दिन को विशेष कार्यक्रम एवं साधना-सप्ताह में प्रतिदिन सत्संग; आश्रम में दो मेडिकल कैम्प, कुष्ठरोगियों की एक संस्था में तथा एक संन्यासिनी माता जी की षोडशी पर बर्तन, वस्त्र, प्रसाद का वितरण।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा दैनिक द्विवार पूजाएँ; पश्चात् भगवद्गीता के कुछ अध्यायों का पाठ प्रभात में तथा सन्ध्या को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण; प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा तथा साप्ताहिक सत्संग और 'शिवानन्द-दिन' को विशेष पादुका-पूजन सम्पन्न करती है। श्री गुरुपूर्णिमा—ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान; पादुका-पूजा, गीता-पारायण; पूर्वाह्न में ९० मिनट का महामन्त्र का अखण्ड-कीर्तन; सायंकाल में विशेष सत्संग। आराधना-दिन—ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र से सहस्रार्चना; गीता-पारायण; १ घण्टा महामन्त्र-संकीर्तन, सायंकाल में विशेष सत्संग। समीप के एक ग्राम में भी गीता-पारायण आयोजित हुआ।

बरबिल् (उड़ीसा): शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को चल-सत्संग; मासिक 'चिदानन्द-दिन' को साधना-दिन, पादुका-पूजा और सान्ध्य-सत्संग नियमित सम्पन्न किये। जुलाई माह में श्री स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय ने ४२१ मरीज़ों के इलाज़ किये।

बरगढ़ (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ—द्विवार पूजाएँ; प्रति रविवार को गीता-वर्ग तथा शेष दिनों को स्वाध्याय-अध्ययन कक्ष; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, दिनांक २४ को मासिक साधना-दिन; ध्यान सहित दैनिक योगासन-वर्ग; होमियोपैथिक औषधालय द्वारा दैनिक सेवा। श्री गुरुपूर्णिमा के विशेष कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, आध्यात्मिक प्रवचन, जप, नारायण-सेवा तथा प्रसाद आदि समाविष्ट थे।

बारिपदा (उड़ीसा): प्रति रविवार तथा प्रथम रविवार—मासिक साधना-दिन को पादुका-पूजा तथा श्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा के पश्चात् कुष्ठरोगियों की एक संस्था में ८० बालकों को भोजन-वितरण की सम्पन्नता हुई। कुष्ठरोगियों की संस्था में अन्तेवासियों को निःशुल्क औषधियों का वितरण चालु रहा।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा ने दैनिक पूजा, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा पादुका-पूजा और श्री गुरुपूर्णिमा तथा आराधना-दिन को विशेष पादुका-पूजा आदि सम्पन्न किये।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा श्री विष्णु सहस्रनाम के सामूहिक पाठ द्वारा दैनिक सायं-सत्संग; श्री गुरुपूर्णिमा को गुरु-पूजा, भजन तथा प्रसाद-वितरण;

आराधना-दिन को संकीर्तन, गुरु-पूजा। दिनांक ३१ जुलाई को श्री मुरली-कृष्ण के मन्दिर-निर्माण हेतु भूमि-पूजा आदि आयोजित हुए।

भुज (गुजरात): शाखा ने द्वितीय तथा चतुर्थ शनिवार को आध्यात्मिक प्रवचनों सहित पाक्षिक सत्संग सम्पन्न किये। श्री गुरुपूर्णिमा के विशेष सत्संग में श्री गुरुदेव विषयक प्रवचन के पश्चात् भगिनी आध्यात्मिक संस्थाओं के दो महानुभावों ने ''गुरु की भूमिका'' विषय पर स्व-वक्तव्य किया।

बीकानेर (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँह्नह्नद्विवार पूजाएँ; प्रति रविवार को स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग; श्री सुन्दरकाण्ड पारायण के साथ दिनांक १४ और दिनांक २७ जुलाई को मातृ-सत्संग; 'शिवानन्द-दिन' को पादुका-पूजा; 'चिदानन्द-दिन' को हवन; शिवानन्द पुस्तकालय; योगासन-वर्ग तथा छात्रों को शिष्य-वृत्ति। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) श्री गुरुपूर्णिमा : श्री व्यास-पूजा-श्री शंकराचार्य पूजा, पादुका-पूजा; भजन-कीर्तन, प्रसाद-सेवन। (२) आराधना-दिन : पादुका-पूजा; गुरुदेव के जीवन तथा उपदेश विषयक प्रवचन। (३) श्रावण माहावधि में प्रति सोमवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। (४) सूर्यग्रहण : संकीर्तन तथा दान-वितरण। (५) श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती : श्री सुन्दरकाण्ड पारायण।

विलासपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने निज सत्संग तथा चल-सत्संग की नियमित गतिविधियों के उपरान्त रथ-यात्रा के दिन 'साधना-दिन' का तथा विशेष सत्संग आदि श्री जगन्नाथ मन्दिर-परिसर में आयोजित हुए।

बुगुडा (उड़ीसा): शाखा द्वारा निज शिवानन्द आश्रम में प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा एक मन्दिर में संक्रान्ति-दिन को एक मासिक विशेष सत्संग सम्पन्न किये गये।

बुर्ला (उड़ीसा): शाखा के प्रति रविवार और सोमवार के सत्संगों के आधिक्य में, गुरुदेव के संन्यास-दीक्षा के वार्षिक-दिन को एक विशेष सत्संग, श्री गुरुपूर्णिमा तथा आराधना-दिन को पादुका-पूजा और सत्संग एवं ग्रहणावधि में संकीर्तन आयोजित हुए।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग के उपरान्त प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; जून के महीने में चार चल-सत्संग; दिनांक १५ जून और १६ जुलाई के संक्रान्ति दिनों को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन तथा श्री गुरुपूर्णिमा को भी पादुका-पूजन, साधना-सप्ताह में ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा; आराधना-दिन को प्रातःकालीन प्रभातफेरी, ५ घण्टों का विशेष सत्संग, पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, प्रवचन और १४ निर्धन-निराधारों को अन्न-वस्त्रदान परिचालित हुए। श्री गोस्वामी तुलसीदास-जयन्ती को प्रभात में पूजा और विशेष सत्संग और उनकी आत्मकथा का पठन, तथा दिनांक १९ जून को विशाल संख्या में छात्रों, अध्यापकों और पालकों-संरक्षकों की उपस्थिति में एक स्कूल में सत्संग भी आयोजित हुए।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिलनाडु): शाखा ने दिनांक २९ जून को भारतीय विद्या भवन हॉल में, ''स्वामी शिवानन्द जी का दर्शन तथा मिशन'' विषयक प्रवचन एवं दिनांक १ जुलाई को शाखा-परिसर में कुछ महानुभावों के प्रति सम्मान-प्रदर्शन हेतु अन्य एक कार्यक्रम रखे।

चेन्नै, वॉषरमेनपेट (तमिलनाडु): शाखा ने आराधना-दिन और निज स्थापना-दिन के वार्षिक दिन को विशेष कार्यक्रम आयोजित किये, जिनमें गुरु-पूजा, भजन, स्तोत्र-पाठ, आरती तथा प्रसाद-सेवन प्रमुख रूप से समाविष्ट थे।

ढेंकानाल (उड़ीसा): शाखा के 'श्री गुरुपूर्णिमा के विशेष उत्सव में प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, आदरणीय श्री स्वामी गुरुसेवानन्द जी तथा शाखा के अध्यक्ष द्वारा 'गुरु-तत्त्व' की महिमा विषयक प्रवचन और प्रसाद-सेवन सम्पन्न हुए।

डोंबासरा (उड़ीसा): शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; श्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा तथा भजन-कीर्तन और रथ-यात्रा को विशेष कार्यक्रम आयोजित किये।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): प्रति बुधवार को साप्ताहिक सत्संग तथा रुपये ४०,०००/- के व्यय सहित रेलगाड़ी के यात्री, काँवड़ी-यात्री तथा व्यस्त-मार्गों की जनता को शीतल-जल की थैलियों का निःशुल्क वितरण आदि का सातत्य रहा।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान, स्तोत्र-पाठ की सभा के पश्चात् योगासन और ३० मिनट का संकीर्तन, सान्ध्य-सत्संग की शाखा की दैनिक गतिविधियाँ हैं। प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ और प्रति रविवार को श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ आदि साप्ताहिक गतिविधियाँ चलती रहीं। श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन को 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का ७ घण्टों का अखण्ड संकीर्तन, भजन-कीर्तन, प्रसाद-वितरण के साथ सूर्यग्रहण की अवधि में तथा श्रावण माह में शिवजी का अभिषेक और पूजा सहित 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का दो घण्टों का संकीर्तन सम्पन्न हुआ।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियाँ ह्रह्रश्री विश्वनाथ-मन्दिर में त्रिवार आरती दैनिक प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान सभा; दैनिक २ घण्टों का सान्ध्य-सत्संग; दैनिक योगासन-वर्ग; प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा; प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण तथा अन्य दिनों को अन्य स्तोत्र-पाठ। विशेष गतिविधियाँ ह्रह्र(१) श्री गुरुपूर्णिमा : 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड संकीर्तन; गुरु-पूजा; व्यास-पूजा; हवन। (२) सूर्यग्रहण ह्रह्र२ घण्टे संकीर्तन। (३) श्रावण-महीना : प्रति सोमवार को विशेष पूजा।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): प्रति रविवार को हवन, प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा, प्रति मंगलवार को नारायण-सेवा आदि शाखा की नियमित गतिविधियों के उपरान्त जून माह में श्री राम-कथा तथा अप्रैल २८ से मई ६ पर्यन्त नौ दिवसीय भागवत-कथा।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँ ह्रह्रदैनिक प्रभातीय श्री देवी-भागवत कथा; महामृत्युंजय मन्त्र-जप सहित दैनिक सत्संग; प्रति गुरुवार को १ घण्टा महामृत्युंजय-जप, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; दिनांक ७ जुलाई को भी श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; हवन और स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को मातृ-सत्संग, होमियोपैथिक औषधालय, जिसके द्वारा जुलाई माह में ६१२ मरीज़ों के इलाज़ हुए; दैनिक योगासन-वर्ग; स्वामी शिवानन्द पुस्तकालय; २६ निर्धन विधवा स्त्रियों को प्रतिमाह रुपये ३९००/- की आर्थिक सहाय; दैनिक रूप से निर्धनों को अन्नदान तथा प्रति रविवार को उनको मिष्टान्न के साथ अन्नदान (३०० व्यक्ति लाभ लेते हैं); कोरा राशन ९० किलोग्राम अनाज; १५ किलोग्राम चीनी, खाद्य-तेल, चाय-पत्ती आदि; ८० छात्रों को छात्र-वृत्ति। विशेष गतिविधियाँ ह्रह्र(१) श्री गुरुपूर्णिमा : ६० प्रतिभागियों सहित पादुका-पूजा। (२) श्रावण का महीना : दैनिक विशेष पूजा; अभिषेक।

लँगथाबाल (मणिपुर): पादुका-पूजा सहित श्री गुरुपूर्णिमा को विशेष सत्संग सम्पन्न हुआ, जिसमें 'गुरु परम्परा' विषयक प्रवचन भी समाविष्ट था।

लुधियाना (पंजाब) : श्री गुरुपूर्णिमा और नागपंचमी को विशेष सत्संग। रुद्राष्टाध्यायी के वैदिक शिव-श्लोकों का पाठ-गान के उपरान्त उनके अर्थ तथा व्याख्या की गयी।

मंझीगुडा (छत्तीसगढ़): श्री गुरुपूर्णिमा को शाखा ने दो घण्टों पर्यन्त 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का जप, पादुका-पूजा और हवन आयोजित किये।

कक्चिंग (मणिपुर) : शाखा ने निज सेवा आश्रम में, श्री विश्वनाथ मन्दिर में दैनिक द्विवार पूजाओं के उपरान्त श्री गुरुपूर्णिमा को पादुका-पूजा, गुरु-गीता का पठन तथा रात्रिभर भजन-कीर्तन किये। शाखा के मासिक थौबल जिला-सत्संग, जो दिनांक १९ अप्रैल, ७ जून तथा १२ जुलाई को सम्पन्न किये गये, उनमें तथा दिनांक २४ मई के मणिपुर राज्य सत्संग में सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया। दिनांक २४ जून तथा २ जुलाई को रथ-यात्रा निमित्त विशेष कार्यक्रम; दिनांक ३ मई से ३० मई पर्यन्त १११ वाँ निवासीय योग-तालीम कैम्प तथा दिनांक ७ जून से दिनांक २१ जून पर्यन्त, ५१ प्रतिभागियों सहित समीपवर्ती ग्राम में, एक और कैम्प आदि आयोजित हुए। दिनांक ३, ४, २५ अप्रैल और दिनांक २५ तथा २९ मई को लगभग ८५ और १४३० प्रतिभागियों सहित न्यू पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल में तथा एँटार्टिका इग्लिश स्कूल में क्रमश आयोजित हुए। शाखा के सेक्रेटरी ने, दिनांक ८ जून को राष्ट्रीय युवा परिषद में और दिनांक २८ जून को इम्फाल में मणिपुर और मिजोरम राज्यों के लिए, आयोजित परिसंवाद में ''युवानों का आध्यात्मिक सामर्थ्य'' विषयक प्रवचन किये।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, दिनांक १२ जुलाई को दो प्रवचनों युक्त विशेष सत्संग तथा दिनांक १९ जुलाई को भजन-प्रस्तुति सम्पन्न करके होमियोपैथिक औषधालय की सेवा का सातत्य रखा।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): प्रति रविवार के सत्संग में भक्तगण श्रीमद्भगवद्गीता के तीन नये श्लोक तैयार करके उनकी परिचर्चा करते हैं। श्री गुरुपूर्णिमा को प्रभातीय ४ घण्टों की सभा में गुरु-पूजा, होम और प्रसाद-सेवन तथा २ घण्टों की सान्ध्य-सभा में पूजा और प्रवचन समाविष्ट थे।

खाटिगुडा (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं तथा श्री गुरुपूर्णिमा, १२ घण्टों के अखण्ड कीर्तन तथा नारायण-सेवा युक्त 'साधना दिन' के रूप में मनायी गयी।

खेडब्रह्मा (गुजरात): शाखा द्वारा दिनांक १९ जुलाई को 'शिवानन्द आश्रम' और 'आत्म-साक्षात्कार' के प्रवचनों सहित मासिक जाहिर सत्संग मनाया गया तथा ज्ञान-प्रसाद वितरित हुआ।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश) : शाखा के साप्ताहिक सत्संग, मातृ-सत्संग, एकादशी के महामन्त्र कीर्तन, प्रातः और सायंकाल पुरुष-वर्ग तथा महिला-वर्ग हेतु योगासन-वर्ग; समाज-सेवा : श्री स्वामी देवानन्द होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा तथा निर्धन महिलाओं को रुपये २००/- का दान; निर्धनों को जून के महीने में ४८० किलोग्राम गेहूँ-वितरण और वृद्धाश्रम को रुपये ३०,०००/- का दान इत्यादि भी समाज-सेवा की गतिविधियाँ चलती रहीं।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियाँह्नह्नदैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय २ घण्टों पर्यन्त सभा; दैनिक सान्ध्य-सत्संग; प्रति गुरुवार को साप्ताहिक चल-सत्संग; प्रति शनिवार और एकादशी को मातृ-सत्संग; प्रति माह दिनांक ३ को अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन ६ घण्टों पर्यन्त। विशेष गतिविधियाँ ह्नह्न(१) श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन : ७४ प्रतिभागी मुख्यालय कार्यक्रमों में तथा

अनेक भक्तों द्वारा 'शिवानन्द भजन-मन्दिर' में भी विशेष कार्यक्रमों की सम्पन्नता। (२) श्रावण का महीना : प्रति सोमवार को रुद्राभिषेक।

नयागढ़ (उड़ीसा): शाखा के साप्ताहिक सत्संग, मातृ-सत्संग, शनिवार को हनुमान जी के स्तोत्र-पाठ तथा प्रति माह द्वितीय रविवार को मासिक साधना-सत्संग के उपरान्त श्रीमती कमल पाणिग्रही जी द्वारा भागवत-सप्ताह, दिनांक २० जून से २६ दिनांक पर्यन्त प्रोफेसर हुदानन्द जी द्वारा योग-वेदान्त वर्ग और मुख्य अतिथि, आदरणीय श्री बिपिन बिहारी दास महाराज जी द्वारा श्रीमद् भागवतम् पर प्रवचन।

श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन, पादुका-पूजा, सम्पूर्ण गीता-पाठ, विविध स्तोत्र-पाठ; नारायण-सेवा और प्रसाद-सेवन आदि थे। साधना-सप्ताह में आदरणीय श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी के प्रवचनों युक्त दैनिक चल-सत्संग किये गये ।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा के माह के रविवारीय सत्संगों में क्रमशः श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, ध्यान, भण्डारा, गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय तथा स्थानिक सन्त का प्रवचन आदि समाविष्ट थे।

परलाखेमुंडी (उड़ीसा): प्रति रविवार को प्रभात में पादुका-पूजा, सान्ध्य-सत्संग, प्रति मंगलवार को चल-सत्संग; श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन पर्यन्त १० दिवसीय कार्यक्रमों में पादुका-पूजा विशेष सत्संग, कुष्ठरोगियों की बस्ती में फल तथा मिठाई का वितरण दैनिक रूप से; पादुका-पूजा और विशेष सत्संग पूज्य गुरुदेव के संन्यास-दीक्षा के वार्षिक दिन को आदि शाखा के कार्यक्रमों में समाविष्ट थे।

फुलबानी (उड़ीसा): दैनिक पूजा के उपरान्त, साप्ताहिक तथा चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा और दिनांक २८ जून को निर्धनों को भोजन-वितरण भी शाखा ने सम्पन्न किये।

रायपुर (छत्तीसगढ़): शाखा के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग, एकादशी को पूजा और स्तोत्र-पाठ चलते रहे। श्री गुरुपूर्णिमा को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना सभा, पादुका-पूजा, प्रवचन और प्रसाद-सेवन युक्त पूर्वाह्न सभा में तथा प्रवचन-भजन-संकीर्तन सान्ध्य सभा में समाविष्ट थे।

राउरकेला (उड़ीसा): शाखा के दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान और योगासन सभा तथा प्रभातीय पादुका-पूजा, साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग एवं शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को प्रभातीय पादुका-पूजाह्नसान्ध्य-सत्संगों का सातत्य रहा। गुरुपूर्णिमा : पादुका-पूजा से आरम्भित १० दिवसीय कार्यक्रमों में प्रभात में श्री रामायण-पारायण और सान्ध्य-कथा; प्रभातफेरी, प्रभातीय ध्यान सभा, योगासन, पादुका-पूजा, आदरणीय श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी तथा श्री पी. के. पंडा जी द्वारा 'गुरुदेव का जीवन तथा उपदेशों' विषयक प्रवचन, स्तोत्र-पाठ, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन एवं सायंकाल में 'रामायण' विषयक समापन युक्त प्रवचन। पूज्य गुरुदेव के संन्यास-दीक्षा के वार्षिक-दिन को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग सम्पन्न किये गये। शाखा की नियुक्त सेवा-समिति ने मेडिकल चेक-अप (सामान्य मेडिकल परीक्षण), कुष्ठरोगियों की संस्था के निवासियों को औषधियों का वितरण, फल-बिस्कुट, समय-समय पर अन्न तथा वस्त्र-वितरण इत्यादि का सातत्य रखा। प्रति रविवार को शाखा का होमियोपैथिक चिकित्सालय मरीज़ों के उपचार करता है।

राउरकेला, फर्टिलाइज़र, टाउनशिप (उड़ीसा): शाखा के प्रति गुरुवार, शनिवार तथा रविवार के सत्संगों की एवं पादुका-पूजन, आदरणीय श्री स्वामी शाश्वतानन्द जी तथा दो भक्तों द्वारा प्रवचन तथा ५० निराधारों की नारायण-सेवा की सम्पन्नता रही।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): (१) श्री गुरुपूर्णिमा : प्रभात में आध्यात्मिक कार्यक्रम एवं सायंकाल में आदरणीय श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी का प्रवचन युक्त सत्संग तथा (२) आराधना-दिन : प्रभात में पर्वत-परिक्रमा, पादुका-पूजा, सत्संग में पूज्य स्वामी जी का प्रवचन नारायण-सेवा और प्रसाद-सेवन। (३) साधना-सप्ताह : दैनिक विशेष सत्संग।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ—दैनिक द्विवार पूजाएँ; आध्यात्मिक कार्यक्रमों युक्त प्रभातीय तथा सान्ध्य सभाएँ; सप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार, प्रति माह प्रथम शनिवार-रविवार के कार्यक्रम; मासिक साधना-दिन, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन के भव्य कार्यक्रम तथा जुलाई के माह में २८४ मरीजों के उपचारों की सम्पन्नता सहित स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल की सेवाएँ। विशेष गतिविधियाँ—श्री गुरुपूर्णिमा तथा आराधना-दिन : पादुका-पूजा, श्री गुरुगीता पारायण, प्रभात में शिवानन्द मन्त्र का कीर्तन तथा प्रवचन युक्त सान्ध्य-सत्संग। महामन्त्र संकीर्तन : १२ घण्टों का दिनांक २१ जुलाई को। श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती : सुन्दरकाण्ड पारायण, श्री गोस्वामी जी विषयक प्रवचन तथा विनय-पत्रिका का स्वाध्याय। योग-तालीम शिविर : दिनांक २९ जुलाई को स्थानिक कॉलेज में।

सासण पुरुषोत्तमपुर (उड़ीसा): (१) पादुका-पूजन—प्रति गुरुवार तथा श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन को। (२) साधना-सप्ताह—स्तोत्र-पाठ, जप, शास्त्र-पठन, भजन-कीर्तन।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ—दैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, श्री शिवानन्द-दिन तथा श्री चिदानन्द-दिन को विशेष सत्संग। विशेष गतिविधियाँ—श्री गुरुपूर्णिमा और आराधना-दिन : प्रभातफेरी, ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन, पादुका-पूजा, 'गुरुदेव का जीवन तथा उपदेश' विषयक प्रवचनों युक्त सत्संग; ३५ कुष्ठरोगियों को अन्न तथा दक्षिणा-दान; ३५० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन, ३ घण्टों का महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप, गुरुदेव की दृश्य-श्राव्य कैसेट युक्त विशेष सान्ध्य-सत्संग। (३) ३ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन : दिनांक २५ जुलाई को १४० प्रतिभागियों युक्त तथा प्रसाद-सेवन युक्त। (४) साधना-सप्ताह : ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, प्रभातीय योगासन-सभा, स्वाध्याय-प्रवचन युक्त सान्ध्य-सत्संग।

सुनाबेडा (उड़ीसा): साप्ताहिक द्विवार सत्संग, श्री गुरुपूर्णिमा तथा आराधना-दिन को प्रभातीय ध्यान, पादुका-पूजा, हवन, आरती। साधना-सप्ताह में प्रभातीय ध्यान; सान्ध्य-सत्संग।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): दैनिक श्री रामायण और श्रीमद् भागवतम् के स्वाध्याय-प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, प्रति रविवार को श्री रामायण पर प्रवचन। जीव-दया और जीवों को खाद्य का अर्पण, निर्धनों को प्रति माह कोरा राशन का अर्पण। दिनांक ३ मई से दिनांक ७ मई पर्यन्त आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी की निश्रा में ५ दिवसीय शालेय कन्याओं हेतु शिविर का आयोजन। शाखा ने दत्तक लिये हुए ग्राम कठडा में दो सत्संगों का आयोजन। शिवानन्द पुस्तकालय द्वारा सेवा तथा राज-मार्ग पर जल-सेवा।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा का सत्संग दिनांक २६ जुलाई को तथा श्री गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर पादुका-पूजन सम्पन्न हुए।

विजयवाडा (आन्ध्र प्रदेश) : शाखा ने दिनांक ५ जुलाई को मासिक सत्संग तथा श्री गुरुपूर्णिमा को विशेष सत्संग आयोजित किये। उभय सत्संगों में आध्यात्मिक प्रवचन किये गये।

वडोदरा (गुजरात): शाखा ने प्रति गुरुवार को भजन-सत्संग; शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को मन्त्र-जप और पादुका-पूजा परिचालित किये। दिनांक १४ जून को मार्गदर्शन द्वारा ध्यान तथा २१ जून और २८ जून को 'ईशावास्योपनिषद्' पर परिचर्चा सम्पन्न की। शाखा की सामाजिक सेवाएँ, होमियोपैथिक और आयुर्वेदिक औषधालयों द्वारा, एक्युप्रेशर उपचारों द्वारा तथा निर्धन मरीज़ों को औषधियों के निःशुल्क वितरण द्वारा चालु रखी।

विक्रमपुर (उड़ीसा): शाखा के साप्ताहिक सत्संग तथा मातृ-सत्संग यथावत् सम्पन्न हुए। पादुका-पूजा तीन अवसरों पर की गयी। श्री गुरुपूर्णिमा के विशेष कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-सभा तथा साधना-सप्ताह में सान्ध्य-सत्संग एवं आराधना-दिन के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-सभा, पादुका-पूजा, महामन्त्र का ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, निर्धनों को भोजन, नगर-संकीर्तन और सान्ध्य-सत्संग समाविष्ट थे। दिनांक ९ जुलाई को एक आध्यात्मिक प्रवचन रखा गया।

विदेशी शाखा

हांगकांग (चीन): शाखा ने ५७ प्रतिभागियों सहित सम्पन्न मासिक सत्संग में महामृत्युंजय मन्त्र का एक घण्टे पर्यन्त जप और गुरुदेव के उपदेश विषयक प्रवचन समाविष्ट थे। शेष शनिवारोंक्को १ घण्टे पर्यन्त महामन्त्र-कीर्तन किया गया।

मई के महीने में नियमित योगासन-वर्गों में २५० नये प्रतिभागी थे। दिनांक ५ मई से दिनांक २६ मई पर्यन्त प्राणायाम की विधि तथा क्रियाएँ और उनके अभ्यास का ज्ञान देने हेतु कार्य-शिविर आयोजित हुआ। दान देनेह्वह्वधर्मार्थ, ८ सत्रों में बुनाई विषयक एक विशेष वर्ग आयोजित हुआ।

सूचना

स्कन्द-षष्ठी-महोत्सव

शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी भगवान् सुब्रह्मण्य का पवित्र स्कन्द-षष्ठी-महोत्सव **१९ से २४ अक्तूबर २००९** तक मनाया जायेगा। आश्रम के 'भजन हाल' में प्रतिष्ठित भगवान् कार्तिकेय की मूर्ति की अभिषेक, अर्चना, पुष्पालंकार आदि से नित्य विशेष पूजा होगी। भगवान् के स्तुतिपरक ग्रन्थों का दैनिक पाठ भी होगा। उत्सव की समाप्ति पर अन्तिम दिन वैदिक मन्त्र, भजन, कीर्तन, गायन आदि के साथ बृहत् पूजा होगी।

हम सभी भक्तों को इस पवित्र पूजा में उपस्थित एवं सम्मिलित होने का हार्दिक निमन्त्रण देते हैं। अपने आगमन की पूर्व-सूचना देने की कृपा करें। जो भक्त गण **'व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पत्रालय शिवानन्दनगर २४९१९२, उत्तराखण्ड'** को पत्र द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करेंगे, उनके नाम से विशेष संकल्प के साथ पूजा की जायेगी।

आप सब पर भगवान् स्कन्द की कृपा रहे! **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

पुण्य-स्मृति में

श्रद्धेय श्रीमती रानी कुमुदिनी देवी का प्रभु चरण-कमलों में स्थान ग्रहण

६ अगस्त, गुरुवार सायंकाल में, ९८ वें वर्ष की परिपक्व अवस्था में, हैदराबाद की श्रीमती रानी कुमुदिनी देवी के देह-त्याग का शोक-समाचार, हम अत्यन्त दुःखी हृदय से दे रहे हैं।

उनका जन्म २३ जनवरी १९११ को वारंगल जिले के वाडेपल्ली स्थान में हुआ था। १९२८ में उनका शुभ-विवाह वनपार्थी संस्थानम् के राजा रामदेव राव से हुआ। उनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ विद्यमान हैं। वह स्वयं हैदराबाद के लड़कियों के विद्यालय, 'सेंट जार्ज'स ग्रामर स्कूल फ़ॉर गर्ल्ज़' में सीनियर कैम्ब्रिज तक पढ़ी थीं, तथा गणित के विषय में स्वर्णपदक प्रापक थीं।

बाद में उन्होंने राजनीति में प्रवेश ले लिया था, १९५५ से १९६४ तक हैदराबाद के म्यूनिसिपल कार्पोरेशन के कौंसलर पद पर रहीं। १९६२ से ले कर वह दस वर्ष तक आन्ध्र प्रदेश की विधान सभा के वनपार्थी निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में सदस्य रहीं।

समाज-सेवा में, निर्धनों की, रोगियों की ओर समाज के पीड़ित वर्ग की सेवा में उनकी अत्यधिक रुचि थी। १९९८ में उन्होंने निस्सहाय कुष्ठरोगियों के 'पुनर्वास होम' की स्थापना की और गुरुदेव के नाम पर उसे 'शिवानन्द रीहैबिलिएशन होम' नाम दिया। बाद में यह संस्था एक विशाल क्षेत्र की सेवा में तत्पर, बहुशासित विशद रूप धारण कर गयी।

उनका असीम उत्साह और ऊर्जा बहुमुखी रूपों में प्रवाहित हुई। वह 'पुरन्दर मैमोरियल ट्रस्ट' तथा 'चैतन्य मैमोरियल एजुकेशन सोसायटी' की संस्थापक न्यासी थीं। 'मदर एण्ड चाइल्ड सोसायटी', 'सेवा समाजम् बालिका निलयम्' तथा 'चूड़ामणि वृद्ध आश्रम' की वह संस्थापक एवं अध्यक्ष थीं। अन्य अनेक संस्थाओं के अतिरिक्त वह 'तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् बोर्ड' में १९६७ से १९७० तक सेवा में रहीं। समाज के निम्न वर्ग की समर्पित सेवाओं के लिए उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा असंख्य पारितोषिकों और प्रशस्ति-पत्रों से सम्मानित किया गया था।

हमारे परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की वह गहनतम निष्ठावान् भक्तों में से थीं तथा मध्य १९५० में जब से वह हमारे आश्रम में प्रथम बार आयी थीं, तभी से ही गुरुदेव के इस आश्रम का एक सुदृढ़ अवलम्ब बन गयी थीं। तभी से दिव्य जीवन संघ द्वारा ली गयी प्रत्येक बड़ी-से-बड़ी योजना पर भी उनकी अबाध तत्क्षण समर्थन देती हुई वित्तीय सहायता की छाप लग जाती थी। आश्रम में उनका आगमन आश्चर्यजनक रूप से नियमित था तथा आश्रम के लिए उनका चिन्तन अद्भुत रूप से उदारतापूर्ण था।

१९५६ में, जब बाद में गुरुदेव के समाधि-स्थान के लिए चयनित भूमिगत स्थान के ऊपर वाले शिवानन्द मन्दिर का निर्माण-कार्य सम्पूर्ण हुआ, तब तत्काल ही गुरुदेव ने उस मन्दिर तथा उसमें स्थापित संगमरमर की 'प्रतिमा' (गुरुदेव की) के उद्घाटन के लिए रानी कुमुदिनी देवी को चुना।

१९६२ में कुम्भ मेले के अवसर पर आश्रम अधिकारी-वर्ग ने समस्त आश्रम में प्रथम बार 'नल द्वारा जल-प्रवहन सुविधा' प्रारम्भ करने की योजना बनायी, और देखिए, कुमुदिनी माता जी उसी क्षण अत्यन्त हर्षपूर्वक इस सम्पूर्ण योजना का व्यय स्वयं वहन करने को तत्पर हो गयीं। इसके अतिरिक्त करोड़ों की संख्या में पुस्तकों के प्रकाशनार्थ वित्तीय सहायता दे कर उन्होंने गुरुदेव की 'ज्ञान-यज्ञ-योजना' में कल्पनातीत सहायता की। संस्था के प्रति उनकी विशाल-हृदयी सेवाओं की गणना करना अत्यन्त कठिन है।

अपने नाम के आगे गुरुदेव का नाम लगाने का उनको विशेषाधिकार प्राप्त था, जो कि अत्यन्त गिने-चुने सौभाग्यशालियों को ही सद्गुरु कृपा से प्राप्त होता है। अतः वह 'शिवानन्द कुमुदिनी देवी' नाम से जानी गयीं।

भगवान् श्री विश्वनाथ और परमाराध्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से हम दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परम शान्ति के लिए हार्दिक प्रार्थना करते हैं! हरि ॐ तत् सत्!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

ज्ञानामृतम्

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ईश्वर में सभी प्राणियों का समावेश है और सभी प्राणियों में ईश्वर का समावेश है।

सूर्योदय के प्रकाश से जैसे फूलों की पंखुड़ियाँ उघड़ जाती हैं, वैसे ही आप ईश्वर के प्रकाश के समक्ष अपने हृदय की पंखुड़ियों को उघड़ जाने दीजिए।

ज्ञानाग्नि में शुद्ध हो कर साधक परमात्म-पद को प्राप्त करता है।

वासना की अग्नि आपके अन्तःकरण को विदग्ध करती है।

आप अपनी प्रत्येक अनुभूति के साथ कुछ-न-कुछ विकास तो करते ही हैं।

आपकी बाह्य परिस्थितियाँ भी आपके आन्तरिक अभ्युत्थान में सहायक होती हैं।

आध्यात्मिक अभ्युत्थान के सोपान हैं क्रमशः कर्म, उपासना, ध्यान और साक्षात्कार।

अनन्त जीवन-चक्र में 'मृत्यु' तो एक आवर्ती घटना है।

सभी अच्छे विचार कालान्तर में अच्छे कर्मों को जन्म देते हैं।

ईश्वर ही परम सुख का मूल है।

धर्म ही श्रेष्ठ जीवन की कुंजी है।

परमात्मा से तादात्म्य ही मानव-जीवन की मंजिल होनी चाहिए।

शुभ कर्म की परिभाषा यही है कि हम इससे ईश्वर के प्रति उन्मुख हों।

सत्य का साक्षात्कार ही ज्ञान है।

राग, द्वेष और भय अविद्या से प्रसूत हैं।

धर्म का उद्भव भय से होता है; लेकिन भक्ति और उपासना के बाद ईश्वर-साक्षात्कार में इसकी परिसमाप्ति होती है।

त्याग-भाव को अपना कर आप ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश कर सकते हैं।

जब बाह्य सुखों का परित्याग किया जाये, तो आन्तरिक सुख प्रकट होता है।

धर्म उस परम पुरुष के साक्षात्कार में निमित्त है, जिसे ईश्वर कहते हैं।

पंचभूतों का अतिक्रमण कर आप अमर आत्मा में निवास कीजिए।

विवेकी पुरुषों के अनुभव से संसार 'नश्वर' है; किन्तु सन्तों की दृष्टि में यह 'ईश्वर का ही रूप' है।

मन, वचन और कर्म में साम्य लाने की कोशिश कीजिए। मन में कुछ सोचना, वचन से कुछ अन्य बात ही बोल देना और कर्म से कोई तीसरा कर्म कर गुजरना अच्छा नहीं है।

सांसारिक विचारों के कुहरे से ईश्वर का स्वरूप ढका रहता है। **(अनुवादक : ज्ञानेश्वर शास्त्री वर्मा)**